।। ॐ श्री गणेशाय नमः।।

(१)

सिद्धि को दाता विघ्न विनासन, होरी खेलें गिरिजा पति नन्दन
गौरी को नन्दन मूसा को वाहन, होली खेलें गिरिजापति नन्दन
ला हो भवानी अक्षत चन्दन, होली खेलें गिरिजापति नन्दन
गज मोतिन से चौक पुराऊँ, होरी,
ताल बजाये अंजन कंचन, होरी
डमरू बजावैं शम्भू विभूषन, होरी,

(२)

गिरिजा सुत गणपति विघ्न हरो। टेक।
सब घर मंगल काज करो गिरिजा सुत गणपति विघन हरो
लम्बोदर गज वदन विनायक, भाल अरुण ये रंग धरो
चार भुजा मूसक की सवारी, विघ्न अमंगल देखि डरो।। गिरिजा सुत।
इन्दु भाल गज वदन विनायक श्वेत वदन एक दन्त धरो
सुर नर मुनि सब ध्यान धरत है नहि गणपति बिन काज करो
द्वादश मन्त्र जपो निशि वासर नाम सुमिर ले दुःख हरो।। गिरिजा सुत।

(३)

हर - हर पीपल पात लाल ध्वजा फहरानी। टेक।
काँ होलो देवी को थान काँ आली देवी भवानी।
पूर्णागिरी देवी को थान वाँ देवी आली भवानी।। हर-हर।।
चम्पा के दस फूल माली ने हार गुथानी।
हार गुथो लिये जाय देवी के आगे धरानी।। हर-हर।।
काँ देवी तेरो थान काँ देवी आली भवानी।
सुरा - सुरा बोकरा मारी वाँ वाँ देवी अघानी।। हर - हर।।
तौरी को यो काम देवी फूल मनोली।
हर-हर पीपल पात, लाल ध्वजा फहरानी।। हर-हर।।

अनुक्रमणिका



होली नं0 1

पहले सुमिरन उनको जिनके हैं दस नाम।
दूजो सुमिरन गणपति सिद्ध करें सब काम।।
जल में विष्णु कमल में ब्रह्मा प्रकट भये।
ब्रह्मा सोचे मन में मैं काहे को आय।।
भयी है आकाशवाणी शबद भयो ओंकार।
तुम हो ब्रह्मा ज्ञानी मन में क्यों घबराय।।
सृष्टि रचन के कारण तुम पैदा हो आय।
वेद नहीं धरती नहीं सृष्टि कहाँ रचवाय।
पहले रूप हरी ने मत्स्य लियो अवतार।।
शंकासुर को मार के वेद लियो है आप।
वेद दियो ब्रह्मा को आप चले पाताल।।
दूसरो रूप हरी ने धरती अधिर उठाय।
जल में तुलसी को पत्ता, ता में धरती समाय।।
चार दिशा दिगपाला धरती ले हो बचाय।
चार वर्ण पैदा किए आपहि नाम धराय।।
ब्रह्मा वेद उचारे क्षत्री राज चलाय।
वैश्य वनिज को राखे शूद्रै रहल उठाय।
चन्द्र सूरज तारा भये धरती भई आकाश।।
सृष्टि भई है जग में रच्यो सकल संसार।
चौथे भये नरसिंह खम्ब लियो फड़वाय।।
हरिणाकुश को मार के भक्त लियो बचवाय।
पाँचों भये है बावना बलि के द्वारे जाय।।
माँगा दान बली से, बली चल्यो पाताल।
छटे भये हैं फरसा, क्षत्री दोनों मार।।

होली नं0 2

शिव शंकर होली खेलैं सदा।।२।।
माथे में चन्दा शीश में गंगा-२ भांग धतूर को पीवै सदा।। शिव
मृग छाला को बगल में लीनू-२ बाघम्बर को ओढ़ै सदा।। शिव
बैल में चढ़ि के मृदंग बजावे-२ राम भजन को करत सदा।। शिव
कानों में कुण्डल हाथ में झोली-२ जग पालन को फिरत सदा।। शिव
भक्तजनों को मुक्ति देवै-२ दुर्जन को ये मारै सदा।। शिव
त्रिपुरासुर को शिव ने मारा-२ फिर काशी में बसत सदा।। शिव
जब कामदेव ने आके सताया-२ भस्म कियो है मारि सदा।। शिव
शिव शंकर की भक्ति करे जो-२ तरि बैकुण्ठ जाय सदा।। शिव

होली नं0 3

शिव के मन माहि बसे काशी।।२।।
आधी काशी में बामन बनिया,
आधी काशी में सन्यासी।। शिव के मन।।
काहे करन को बामन बनिया,
काहे करन को सन्यासी।। शिव के मन।।
काही को पूजे बामन बनिया,
काही को पूजे सन्यासी।। शिव के मन।।
देवी को पूजे बामन बनिया,
शिव को पूजे सन्यासी।। शिव के मन।।
क्या इच्छा पूजे बामन बनिया,
क्या इच्छा पूजे सन्यासी।। शिव के मन।।
नव सिद्धि पूजे बामन बनिया,
अष्ट सिद्धि पूजे सन्यासी।। शिव के मन।।

होली नं0 4

अछ हाँ रे गिरधर राज भयो कंसासुर को,
ओ मथुरा मचि गै धूम ....गिरधर ....
अछ हाँ रे गिरधर वसुदेव देवकी बंदी में,
भई वसुदेव देवकी बंदी में,
ओ लागि गये धरम किवाढ़ ..... गिरधर ......
अछ हाँ रे गिरधर हाथों में हथकड़ी लगी,
भई हाथों में हथकड़ी लगी,
ओ कमर पड़ी जंजीर .... गिरधर ....
अछ हाँ रे गिरधर बारहों चौकी कंसै की,
भई बारहों चौकी कंसै की,
ओ नगर फिरै कोतवाल, ... गिरधर ....
अछ हाँ रे गिरधर भादो मास की अष्टमी
ओ जनम लियो आधी रात ...... गिरधर ......
अछ हाँ रे गिरधर हाथों की हथकड़ी खुली,
भाई हाथों की हथकड़ी खुली,
ओ कमर खुली जंजीर .... गिरधर ....
अछ हाँ रे गिरधर बारह चौकी सो गई,
भाई सोई गये कोतवाल,
ओ हरि मथुरा में जन्म लियो .....गिरधर ......
अछ हाँ रे गिरधर ले बालक को डाली में,
भाई पहुँचें यमुना तीर,
ओ गोकुल को ले जाय ....गिरधर ....

अछ हाँ रे गिरधर लहर बहर की यमुना चली,
भाई लहर बहर की यमुना चली,
ओ चरण छुवन को आय ......गिरधर ....
अछ हाँ रे गिरधर उनहि की यमुना उनहि रही,
ओ उवहि की यमुना थमन रही,
ओ बीच में पड़ि गयो रेत ......गिरधर ....
अछ हाँ रे गिरधर चन्दा उतरे पार भये,
भई चन्दा उतरे पार भये,
पहुँचे नन्द के द्वार .... गिरधर ....
अछ हाँ रे गिरधर बालक छोड़ के कन्या लाये,
भई बालक छोड़ के,
ओ आये मथुरा बीच .... गिरधर ....

होली नं0 5

शिव शंकर खेलत हैं होरी, साथ लिए गौरा गौरी।। शिव।।
अंग वभूत गले रुण्ड माला,
कानन नागन की जोड़ी ।। शिव शंकर खेलत है होरी।।
एक ओर से शिव शंकर चेले।
एक ओर से खेलत है गौरी ।। शिव शंकर खेलत है होरी।।
आप तो डमरू बजावें,
नाचें पारवती गौरी।। शिव शंकर खेलत है होरी।।
बाजत है मृदंग ढप झांझर,
बाजत बीनन की जोड़ी।। शिव शंकर खेलत है होरी।।

होली नं0 6

भलो-२ जनम लियो श्याम राधिका,
भलो जनम लियो मथुरा में। ... टेक ...
कौन पुरी में जनम लियो है,
कौन पुरी का वास।..... राधिका .....
मथुरापुरी में जनक लियो है,
गोकुल कीजो वास। ..... राधिका .....
काहे के कोख में जनम लियो है,
कौन दूध पिलाय ..... राधिका .....
देवकी कोख में जनम लियो है,
यशोदा दूध पिलाय ..... राधिका .....
काहे के वंश में जनम लियो है,
काहे के लाल कहाय ..... राधिका .....
वसुदेव वंश में जनम लियो है,
नन्द के लाल कहाय .... राधिका .....
काहे के घर में आनन्द होवे,
काहे के घर शोक ..... राधिका .....
नन्द के घर में आनन्द होवे,
कंस के घर में शोक .... राधिका .....
बालहि लीला करत कन्हैया,
दही माखन को खाय ..... राधिका .....

होली नं0 7

तुम वेग लियो अवतार,
श्याम संयोग भयो राधा गोरी।।
कै युग में कान्हा जन्म लियो है, कै युग में राधा गोरी।
श्याम संयोग भयो राधा गोरी।।
सतयुग में कान्हा जन्म लियो है, द्वापर में राधा गोरी।
श्याम संयोग भयो राधा गोरी।।
कौन शहर कान्हा जन्म लियो है, कौन शहर राधा गोरी।
श्याम संयोग भयो राधा गोरी।।
मथुरा शहर में कान्हा जन्म लियो है, कुण्डलपुर राधा गोरी।
श्याम संयोग भयो राधा गोरी।।
कितने बरस के कुँवर कन्हैया, कितने बरस राधा गोरी।
श्याम संयोग भयो राधा गोरी।।
सोलह बरस के कुँवर कन्हैया, तेरह बरस राधा गोरी।
श्याम संयोग भयो राधा गोरी।।

होली नं0 8

हरि आए मोर मुकुट धारी।
गज की टेर सुनी भारी, हरि आए।
हाथ शंख-चक्र गदा विराजे-२, कानन कुँडल गिरिधारी। हरि०।
वक्षस्थल कौस्तुभ मणि छाजै-२। आनन सुन्दर बनवारी। हरि०।
गज और ग्राह लड़े जल भीतर-२। लड़त-लड़त गज हारी। हरि०।
तिल भर सूँड रहो जल बाहर-२। तब हरि नाम पुकारी। हरि०।
ग्राह मारि गज फन्द छुड़ायो-२। पुष्प वृष्टि भई नभ भारी। हरि०।
दास नारायण कर ले सुमिरन-२। शरणागत की भय हारी। हरि०।

होली नं0 9

कंस ने दूत पठायो हरी, पुतना तुम कैसे मारोगे ... टेक...
बाल - बाल गज मोती पहिने, ओड़ पीताम्बर शाल हरी।
पुतना तुम कैसे मारोगे .... कंस ने दूत ....
नैनन में तब विष को लगाकर, सुन्दर रूप बनाय हरी।
पुतना तुम कैसे मारोगे .... कंस ने दूत ....
हाथ में कमल के फूल को लेकर बन ठन गोकुल जाय हरी।
पुतना तुम कैसे मारोगे .... कंस ने दूत ....
हँसती - हँसती नन्द के घर में, पूछे भलि कुसलात हरी।
पुतना तुम कैसे मारोगे .... कंस ने दूत ....
यशोदा तेरो बालक भयो है, जीवत कोटी साल हरी।
पुतना तुम कैसे मारोगे .... कंस ने दूत ....
तब पुतना हरि गोद में लेकर, त्रिया चरित्र दिखाय हरी।
पुतना तुम कैसे मारोगे .... कंस ने दूत ....
जब पुतना हरि दूध पिलावे, अचरज रूप धराय हरी।
पुतना तुम कैसे मारोगे .... कंस ने दूत ....
आँधी भयानक जोर चली तब, भूल गये सब लोग हरी।
पुतना तुम कैसे मारोगे .... कंस ने दूत ....
पीकर विष को मारी पुतना, बालक रूप धराय हरी।
पुतना तुम कैसे मारोगे .... कंस ने दूत ....

होली नं0 10

गोरस लगी जगात सखी गोरस ना बेचन पाओगे।...टेक..
जाय कन्हैया यमुना किनारे, घाट लियो रुकवाय सखी
गोरस ना बेचन पाओगे .... गोरस लगी ....
कहाँ के तुम ग्वाल गुजरिया, कहाँ दधि बेचन जाय सखी
गोरस ना बेचन पाओगे .... गोरस लगी ....
मथुरा के हम ग्वाल गुजरिया, गोकुल बेचन जाय सखी
गोरस ना बेचन पाओगे .... गोरस लगी ....
दान दे गूजरि दान हमारो, दान दियो तब जाय सखि
गोरस ना बेचन पाओगे .... गोरस लगी ....
कहाँ के तुम दानिय है रे, कहाँ के घटवान सखी
गोरस ना बेचन पाओगे .... गोरस लगी ....
गोकुल के हम दानिय है रे, यमुना के घटवान सखी
गोरस ना बेचन पाओगे .... गोरस लगी ....
इस गौंड़िय को दान पड़त है, सब से लीजो दान सखी
गोरस ना बेचन पाओगे .... गोरस लगी ....
हमने जो ला दी दधि की मटकिया, दान काहे को लेय सखी
गोरस ना बेचन पाओगे .... गोरस लगी ....
दान दही को दान मही को, दान जीवन को लेय सखी
गोरस ना बेचन पाओगे .... गोरस लगी ....
मैं हूँ गूजर कंस राजा की, तुझको दूँगी मरवाय सखी
गोरस ना बेचन पाओगे .... गोरस लगी ....
एक ही कंस की कहाँ धराऊँ, सौ सर कंसा लाय सखी
गोरस ना बेचन पाओगे .... गोरस लगी ....

होली नं0 11

ओ प्रथम पड़वा उन्हीं राम चन्द्र भज लेय।।
दूजो दामोदर पूजन चली है सकल बृजनारी।
तृतीया तीन भवन में गावें हरी को फाग - २
चार चतुर्भुज भैय्या भरते लछिमन राम -२
पाँचों पर्व हरी के कृष्ण चबावे पान - २
षष्टी गमनन कीजे मातु पिता के आन - २
सप्तमी सातों वाने कंसासुर के होय - २
आठ पदम अट्ठासी जुड़ि गये छप्पन करोड़ - २
नौमी के नारायण गरुड़ चले भगवान - २
दशमी के दश शीषा काटे लछिमन राम - २
एकादशी के व्रते कृष्ण करे मलहार - २
द्वादशी के धोखे सब सखी रही बिलगाय - २
त्रियोदशी पातक लागो जन्मे अन्जनी पूत - २
भर गये ताल तलैया भर गये सागर नीर - २
पून्यू तो पूरण भई चन्दा बसै आकाश - २
जो यो सोडस गावे तरी बैकुन्ठै जाय।
चौदस पूजन जाने चतुर्भुजी के पास।।

होली नं0 12

ओ सुमिरो सीता राम भया कोई हीरा जनम ना पाओगे।। टेक।।

इस कलयुग में दो ही बड़े हैं।एक गंगा एक राम भया कोई हीरा...

पाप कटन को गंग भई है। नाम जपन को राम भया कोई ...

इस कलयुग में दो ही बड़े हैं, एक ब्राह्मण एक गाय भया कोई...

कुल तारन को गाय भयी है, कर्मन को यो विप्र भया कोई हीरा...

इस कलयुग में दो ही बड़े हैं, एक माता एक पिता भया कोई...

जन्मे से ही सुख दे माता। पालन को यो पिता भया कोई......

निशि दिन ज्योति करे त्रिभुवन में, एक चन्द्रा एक सूरज भया कोई...

सब से बड़कर दो है जग में, राम सुमिर अस दान भया कोई...

होली नं0 13

ओ सुमिरो सीता राम रम भज हरी भज राधे।

एक पेड़ मथुरा मैं जाम्यो जड़ पहुँचे जगन्नाथ,फूल जो फूले द्वारिका।

वो फल लागे बद्रीनाथ, रम भज हरी भज राधे।

ओ सुमिरो सीता राम रम भज हरी भज राधे।

कौन दिशा गढ़ लंका है, कौन दिशा कैलाश, कौन दिशा अयोध्या।

ओ जा में ठाड़े राम रम भज हरी भज राधे ....

ओ सुमिरो सीता राम रमभज हरि भज राधे।

दक्षिण दिशा गढ़ लंका है रे उत्तर दिशा कैलाश।

पूरब दिशा अयोध्या है रे ओ जा में ठाड़े राम।

रम भज हरी भज राधे ....

ओ सुमिरो सीता राम रमभज हरि भज राधे।

काहिन की गढ़ लंका है रे काहिन की कैलास काहिन की अयोध्या।

ओ जा में ठाड़े राम रम भज हरि भज राधे ....

ओ सुमिरो सीता राम रम भज हरि भज राधे।

सोने की गड़ लंका है रे पत्थर को कैलास पानन की यो अयोध्या।

ओ जा में ठाड़े राम रम भज हरि भज राधे ....

ओ सुमिरो सीता राम, रम भज हरी भज राधे ....

कौन बसे गढ़ लंका में रे, कौन बसे कैलास कौन बसे यो अयोध्या।

ओ जा में ठाड़े राम रमभज हरी भज राधे ....

ओ सुमिरो सिता राम रम भज हरी भज राधे।

रावण बसे गढ़ लंका में रे शिवजी बसे कैलास राम बसे यो अयोध्या।

ओ जा में ठाड़े राम रमभज हरि भज राधे ....।

होली नं0 14

हमें भरोसो राम सीता जनम रही। -२

कौन पुरी में सीता जन्मीं, कौन पुरी में राम सीता जन्म रही हमें।

जनक पुरी में सीता जन्मीं, अवध पुरी में राम सीता जन्म रही हमें..

कौनहि युग में सीता जन्मी-२, कौन युग में राम सीता जनम रही हमें।

सत युग में सीता जन्मी-२, ता युग जन्मे राम सीता जन्म रही हमें ..

कौन वरण की सीता जन्मी-२, कौन वरण में राम सीता जनम रही हमें

गौर वरण की सीता जन्मीं, श्याम वरण के राम सीता जन्म रही हमें।

कितने बरस की सीता भई है, कितने बरस के राम सीता जन्म रही हमें.

सात बरस की सीता भई हैं-२, तेरह बरस के राम सीता जन्म रही हमें.

कौन राजा घर सीता जन्मी, कौन राजा घर राम सीता जन्म रही हमें...
जनक राजा घर सीता जन्मीं, दशरथ के घर राम सीता जन्म रही हमें...

होली नं० 15

कह दीजो रघुनाथ भरत से कह दीजो।। टेक।।
एक पीड़ दशरथ को व्यापे, अंगूठा लागी फॉस भरत से कह दीजो।।
एक पीड़ केकई को व्यापें, सोवे पाव पसार भरत से कह दीजो।
एक पीड़ रामजी को व्यापे, चौदह बरस वनवास भरत से कह दीजो।
एक पीड़ सीता को व्यापे, रावण हर ले जाय भरत से कह दीजो।
एक पीड़ रावण को व्यापे, सीता हर ले जाय भरत से कह दीजो।
एक पीड़ अंगद को व्यापे, लंका रोपे पाँव भरत से कह दीजो।
एक पीड़ हनुमान को व्यापे, लाय संजीवन जाय भरत से कह दीजो।

होली नं० 16

मत पकड़ो चीर असुर मेरो मत पकड़ो हो।
अरे कौन राजा की नारी कहावे, कौन बलिय देवर तेरो।। मत पकड़ो।।
अर्जुन राजा की नारी कहावे, भीम बलिय देवर मेरो।। मत पकड़ो।।
हर हर हर हर हर काँपी द्रोपदी, लाज रखो हे मुकुट धारी।। मत पकड़ो।।
हस्तिनापुर में रानी द्रोपदी। द्वारिका में हरी तेरो।। मत पकड़ो।।
हरी हरी कह द्रोपती टेरे। हरी आये पल छिन में।। मत पकड़ो।।
एक जो चीर दुशासन खैंचे, सौ सर चीर लपट आये।। मत पकड़ो।।
खैंचत चीर दुशासन हारे, तिल भर अंग न उधरो।। मत पकड़ो।।
पूरन वहन कहत कर जोरे, राखो लाज मुकुट धारी।। मत पकड़ो।।

होली नं० 17

हो मोहन नन्द लाल वर्षा ने वन आये। टेक।
वर्षा ने की गूजरी दधू बेचन जाय विच मिले नन्दलाल
ओ दय्या दे हो लुटाय, वर्षा ने वन ....
हो मोहन नन्द लाल वर्षाने वन आये।
अरे काहिन को यो चीरा है रे काहिन लगी है जड़ाउ।
कौन के माथे विराजे ओ कौनै को यो लाल, वर्षाने वन आये....
हो मोहन नन्द लाल ....
अरे मोर मुकुट को चीरा है रे, हीरा लगी है जड़ाउ।
कृष्ण के माथे विराजे जसोदा को यो लाल।
वर्षा ने वन .... हो मोहन नन्द लाल ....
पिचकारी मुख उड़ी है गुलाल उड़ी गई सारी सरहा उड़ी गये।
है गोपी ग्वाल, वर्षाने वन ....
हो मोहन नन्द लाल ....
अरे ढोलक बाजे मजीरा बाजे मोचक बाजे सितार
ढप बाजे ओ ढप देत गुंजार, वर्षाने वन आये।
अरे वर्ष गोवरधन बरसेगो जल मूसलधार गोवरधन के
मेरो धर्म आधर, वर्षाने वन ....
अरे लाल धार गंगा बहे शाल ओड़े लाल
राधा बैठी अटरि भई है निहाल, वर्षाने वन आये ....

होली नं0 18

मथुरा मंडल बीच कान्ह ले जन्म लियो है।
तट जमुना के बीच कान्ह के ख्याल रचो है।
काहे को गेंडू हाथ काहे को दंड बनो है।
सोने को गेंडू हाथ रूपी को दंड बनो है।
मार कन्हैया डोर जमुना जाई पड़ो है।
इस गेंडू के साथ बालक फादी पड़ो है।
सोती यसोदा माई मेरो लाल डुबो है।
जाओ बालक जाओ या घर नाग बुरो है।
ना जाऊँ घर आज नाग से खेलूँ धुमारी,
नागनी नाग जगाय बालक द्वारे खड़ो है।
नाग ले दी सीसुकार बालक स्याही पड़ो है।
धर छाती पर पाँव नागै नाथी लियो है।
काहे को सोजा हाथ काहे की स्योजी बनी है।
सोने को सूजा हाथ रेशम रयोजी बनी है।
चम्पा के नौ दस फूल मालनी हार गुथो है।
मालनी गूथें हार हरज्यू के आगे धरो है।
आई पड़े राजा राम ले के सिर में धरो है।
इकादशी इतवार द्वादशी वृत लियो है।
गोबर अगना लिपाय मोतियन चौक पुरो है।
कै घर आनन्द बनाय कै घर सोच पड़ो हैं।
जसोदा के घर आनन्द बनाय, कंस के सोच पड़ो हैं।
धन्य यसोदा भाई तेरो लाल जियो है।

होली नं0 19

हरी धरें मुकुट खेले होरी - २
किसके संग सीता होरी खेले। किसके संग राधा गोरी।। हरी।।
राम के संग सीता होरी खेलें। कृष्ण के संग राधा गोरी।। हरी।।
कौन पहर सीता होरी खेलें। कौन पहर राधा गोरी।। हरी।।
चीर पहर सीता होरी खेलें। पादम्बर राधा गोरी।। हरी।।
कै युग में सीता होरी खेले। कै युग में राधा गोरी।। हरी।।
सतयुग में सीता होरी खेलें। द्वापर में राधा गोरी।। हरी।।
कौन के हाथ में तलद्रप बाजे। कौन के हाथ मजीर जोड़ी।। हरी।।
राम के हाथ में तलद्रप बाजे। लखन के हाथ मजीर जोड़ी।। हरी।।
कौन के हाथ कनक पिचकारी। कौन के हाथ अबीर झोली।। हरी।।
भरत के हाथ कनक पिचकारी। शत्रुघन हाथ अबीर झोली।। हरी।।
काहिन के दो खम्बा बने हैं। काहिन लागिय है डोरी।। हरी।।
अगड़ चन्दन के खम्बा बने हैं। रेशम लागिय है डोरी।। हरी।।
लचि गये खम्बा झूली गई डोरी। रपट पड़ी राधा गोरी।। हरी।।

होली नं0 20

तेरी तपस्या होय कुँवर भागीरथ गंगा ले आये।। टेक।।
भैरव घाट भगीरथ बैठे-२, कड़ी तपस्या होय। कुँवर भागीरथ...
एक पाँव दो भुजा उठाके-२, तीनों भुवन हिलाय। कुँवर भागीरथ...
माँगी ले कूँवर वर माँगी ले-२, जो मन इच्छा होय। कुँवर भागीरथ...

जो मैं माँगू ना दे शिवजी-२, वचन अकारत जाय। कुँवर भागीरथ..
जो तू मांगे ना दें शिवजी-२, जोग धरम घटि जाय। कुँवर भागीरथ..
हमको शिवजी गंगा दे दो, जगत तरे संसार। कुँवर भागीरथ..
जटा निचोड़ के गंगा देदी-२, वह गई सौ सर धार। कुँवर भागीरथ..
गंगा-गंगा कह ग्वालिनी टेरे-२, गंगा लागी साथ। कुँवर भागीरथ..
समरथ जी ने कुँआ खोदाये-२, भर तुम्बा ले आय। कुँवर भागीरथ..
माता तारे पिता तारे -२, तारो जग संसार। कुँवर भागीरथ...

होली नं0 21

मचि रहि मचि रहि मची रही कोना पर चौबे मची रही।। टेक।।
वस्त्र पीताम्बर रंग रंगीले, मोर मुकुट सोहाय रही।
कोना पर चौबे .... मचि रहि ....
अरे ढोल नगाड़े और तबोला झांझ मृदंगा बाज रही।
कोना पर चौबे .... मचि रहि ....
कौन बजावे ढोल नगाड़े, कौनै झाँझ बजाय रही।
कोना पर चौबे .... मचि रहि ....
अबीर गुलाल के उड़े हैं गुब्बारे, सखियन रंगे छिड़क रही।
कोना पर चौबे .... मचि रहि ....
मथुरा पुरी की कुंज गलिन पे, गोपियन होली खेल रही।
कोना पर चौबे .... मचि रहि ....
मथुरापुरी की कुंज गलिन पे, गोपियन होली खेल रही।
कोना पर चौबे .... मचि रहि ....

कपालि में बिंदिया, आँख में कजरा, हाथ में चूड़ियाँ चमक रहीं।
कोना पर चौबे .... मचि रहि ....
च्यूड़ी में गजरा, गले में हरेवा, नाक में नथिया झलक रही।
कोना पर चौबे .... मचि रहि ....
आँग में अंगिया, पीठ में पछिया, कमर में लहंगा लटक रही।
कोना पर चौबे .... मचि रहि ....

होली नं0 22

जय बोलो यशोदा नंदन की, जय बोलो ....
अरे मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, माला विराजै मोतियन की।
जय बोलो यशोदा ....।।
यमुना किनारे धेनु चुँगावै, हाथ लटुकिया चंदन की।
जय बोलो यशोदा ....।।
वृदांवन में रास रचो है, सौसर गोपी कुंजन की।
जय बोलो यशोदा ....।।
केश पकड़ कर कंस को मार्‌यो, रक्षा करी सब संतन की।
जय बोलो यशोदा ....।।
सारा जग प्रभु चरण निहारे, काटत उनके फंदन की।
जय बोलो यशोदा ....।।
सादर शेष महेश विधाता, सुर नर मुनि के वंदन की।
जय बोलो यशोदा ....।।
कौरव पाण्डव हुआ कुरुक्षेत्र, जीत कराई अर्जुन की।
जय बोलो यशोदा ....।।

नख पर जिनने गिरि को उठायो, गर्व घटायो इन्द्रन की।
जय बोलो यशोदा ....।।
गोकुल, मथुरा छोड़ि वृन्दावन, द्वारिका ले हो वसावन की।
जय बोलो यशोदा ....।।
हर कोई भज लो राधे श्याम को काटत उनके फंदन की।
जय बोलो यशोदा ....।।

होली नं0 23

नदी यमुना के तीर कदम चढ़ि कान्हा बजा गयो बाँसुरिया।। टेक
काहिन की तेरी बांसुरिया २
काहिन को तेरो बीन कदम चढ़ि ....।।
हरिया बाँस की बाँसुरिया २
सोने को तेरो बीन कदम चढ़ि ....।।
कौन बजावै बाँसुरिया २
कृष्ण बजावे बाँसुरिया श्री कृष्ण बजावे बाँसुरिया।
राधा बजावे बीन कदम चढ़ि ....।
कै लख की तेरी बाँसुरिया २
कै लख को तेरी बीन कदम चढ़ि ....।।
छः लख की मेरी बाँसुरिया २
नौ लख को मेरो बीन कदम चढ़ि ....।।
कै सुर बाजै बांसुरिया २
कै सुर बाजै बीन कदम चढ़ि ....।।
तुर हुर बाजै बांसुरिया २
झन हन बाजै बीन कदम चढ़ि ....।।

होली नं0 24

बड़ी जोर की वर्षा आई री, बड़ी जोर की वर्षा आई री ....
एक दिन हरि ने पूजि है मघवा
गिरि को दे पुजवाई री .... बड़ी जोर की ......
सुरपति को तब क्रोध भयो है,
चारों मेघ बुलाई री .... बड़ी जोर की ......
जाकर जल्दी बृज मण्डल में,
जोर की वर्षाओ री .... बड़ी जोर ....
आँधी भयानक साथ में लेकर,
भयंकर रूप दिखाओ री ...... बड़ी जोर ....
गरज-गरज कर मेघा बरसें ,
वर्षत मूसलाधारा री .... बड़ी जोर ....
बृजवासी सब व्याकुल होवें,
घर तजि अब कहाँ जाई री ... बड़ी जोर ....
भयंकर रूप भयो बृजमण्डल में,
हा-हाकार मचाई री ....बड़ी जोर ....
इस अवसर पर कौन बचावै,
हा हा श्याम बिहारी री .... बड़ी जोर ....
नख पर हरि ने गिरि को उठायो,
सब को लेत बुलाई री .... बड़ी जोर ....
आनन्द होवै बृजमण्डल में,
जय-जय बोले गिरधारी री .... बड़ी जोर ....
लज्जित होकर सुरपति आये,
माया तुमरी अपारा री .... बड़ी जोर ....

होली नं0 25

श्री कृष्ण बजावे बीन काली नाथन को .... टेक ......

ग्वालन के संग खेलत गैंदा, यमुना में गिर जाय काली नागन को

श्री कृष्ण बजावे बीन काली नाथन को।।

गेंद के संग में कूद ले बालक, काली गृह में जाय काली नाथन को

श्री कृष्ण बजावे ....।।

काली गृह में काली नागन सोय रह्यो कालो नाग काली नाथन को

श्री कृष्ण बजावे ....।।

कौन दिशा से आयो है बालक, क्या है तुम्हारो गाँव नाथन को

श्री कृष्ण बजावे ....।।

पूरब दिशा से आयो री नागिन, गोकुल मेरो गाँव काली नाथन को

श्री कृष्ण बजावे ....।।

कौन तुम्हारे माता पिता हैं क्या है तुम्हारो नाम काली नाथन को

श्री कृष्ण बजावे ....।।

नन्द यशोदा माता पिता हैं कृष्ण है मेरो नाम काली नाथन को

श्री कृष्ण बजावे ....।।

काली नागिन नाग जगावै, जाग्यो काली नाग काली नाथन को।

श्री कृष्ण बजावे ....।।

नाग हरी को युद्ध भयो तब नाथ्यो कालो नाग काली नाथन को

श्री कृष्ण बजावे ....।।

हाथ में गेंद को लाय कन्हैया, आये यमुना तीर काली नाथन को।

श्री कृष्ण बजावे ....।।

होली नं0 26

कुण्डलपुर के राजा भीष्मक नाम कहाय। - २,

वा घर जन्मी कन्या रुक्मणि नाम धराय।।

असी शहर के अधबिच देवी को दरबार। - २

नित उठ रुक्मणि मन्दिर देवी पूजन जाय।।

कनक बदन तन सोहै जैसे फूले है गुलाब। - २

पूरब दिशा से वदरिया पीलो कैसो होय।।

पीताम्बर के कपड़े गरुण चले भगवान। - २

रथ पर चड़े कन्हैया देखें चहुँ दिशि चाल।।

नजर मिलन पे झपटे, रूक्मणि रथ बैठाय। - २

उसी शहर के सब कहें रूक्मणि हर ले जाय।।

चार बाण ले कर लड़न चले शिशुपाल। - २

हार चले शिशुपाल लौट चले घर आय।।

रुक्म बढ़े जब रथ पर रूक्मणि जोड़े हाथ। - २

भइया मेरो मूरख तुम त्रिलोकी नाथ।।

होली नं0 27

ऐसी चातुर नारी श्रवण मारो छ।

री गाई दूनी बालक श्रवण की, कबहुँ न खाई खीर।

श्रवण मारो छ ऐसी चातुर ....।

खट्टी महरिया सब दिन खाई, कबहुँ न खाई खीर।

इक हँडिया दो पेट बनाये श्रवण चातुर नार। ”
इक वट पाकी खट्टी महरिया, इक वट पाको खीर। ”
अपनी थाल पिता को दीन्ही, पिता थाल खुद लेय। ”
बालक श्रवण की सौ गाई दूनी, आजै खाई खीर। ”
हरे-हरे बाँस काटे श्रवण ने, उनको डोल बनाय। ”
मातु पिताजी धर कन्धे पर, चल मधुवन को जाय। ”
मातु पिताजी बोलन लागे, हमको लागी प्यास। ”
नहि नदिया नहीं पोखरिया, कहाँ मिले पनघाट। ”
जाने को यो सरसों बोवे, आने को फुलि जाय। ”
तब श्रवण ने तुम्भा पकड़यो, पहुँचे जल के पास। ”
दशरथ राजा ने बाण से मार्‍यो, श्रवण को लग जाय। ”
बाला श्रवण राम पुकारे दशरथ ने सुनि पाय। ”
दशरथ राजा पनघट आये श्रवण लाग्यो बाण। ”
मातु पिता मेरे मधुवन में, उनको पिलाओ पानि। ”
दशरथ राजा ने नीर भर्‍यो तब, चल मधुवन को आय। ”
लीजो पिताजी पानी पीलो, तुमको लागी प्यास। ”
तू तो हमरो श्रवण ना है, श्रवण बैरी होय। ”
हमको जीजा श्रापहि दीजो, भानिज हत्या होय। ”
पुत्र के दुःख में हम तो मरेंगे, तुमको भी वैसा होय। ”
ऐसी चातुर नार श्रवण मारो छ .... ।। ”

होली नं0 28

गढ़ छोड़ि दे लंका रावण, गढ़ छोड़ि दे लंका रावण ....
राम की सेना सागर तट पर, सुग्रीव अंगद हनुमाना। गढ़ छोड़ि....
जिस सागर को गर्व कियो तुम, तामें सेतु लगावन। गढ़ छोड़ि....
राम की सेना लंका गढ़ में, राक्षस मार गिरावना। गढ़ छोड़ि....
लंका गढ़ के मारे निशाचर, हाहाकार मचावना। गढ़ छोड़ि....
याद किया जब राक्षसराज ने, आयो है अहिरावण। गढ़ छोड़ि....
बन्धु समेत तबै रघुनाथा, पाताल लोक ले जावना। गढ़ छोड़ि....
शोक भयो तब राम के दल में, कहाँ गये प्रभु लछमना गढ़ छोड़ि..
बोले विभीषण ये कपि भइयो, पाताल लोक में जावना। गढ़ छोड़ि...
जावें पवन सुत पाताल लोक में, देवों के मन्दिर जावना। गढ़ छोड़ि..
बलि देने को यन्त्र विचार्‍यो, जोर से गरजे हनुमाना। गढ़ छोड़ि..
अहिरावण को मार गिरायो, लाये राम लछमना। गढ़ छोड़ि....
रावण के दस मस्तक काटे, बीस भुजा के खंडना। गढ़ छोड़ि....
लंका गढ़ के मारे निशाचर, देवन बन्दी छुड़ावन। गढ़ छोड़ि....

होली नं0 29

आली धूम मची ब्रज कुंजन में।।२।।
आयो फाग जोवन रंग में-२ आली धूम मची ब्रज कुंजन में।।२।।
अम्बा फूले टेसू फूले-२, भँवर गुंजार करे वन में। आली..........
केशर को इक रंग बनो है-२, पिचकारी मारे सो जन-जन में।। आली...
आ हो गोरी खेलें होरी-२, गोरी को लागी जतन तन में।। आली...
वृन्दावन में रास रचो है-२, नाचत श्याम सखियन में।। आली.....

अबीर गुलाल से थाल भरे हैं-२, मुख मीजत है सखियन में।। आली...
कर कंचन पिचकारि चलावें-२ मारत श्याम सखियन में।। आली...

होली नं0 30

तेरे नैन रसीले यार, बालम प्रीत लगा ले नैनों से।। २।।
अछ हाँ रे बालम मस्त महिना फागुन को, खेलि ले होलि धुमार।।
बालम प्रीति...............तेरे नैन................
अछ हाँ रे बालम, बन बन फूले टेसूवा।
भई बन बन फूले टेसूवा, लागत नीको सुहाय।।
बालम प्रीति...............तेरे नैन................
अछ हाँ रे बालम कोयल बोले बन - बन में।
भई कोयल बोले बन बन में, मीठे शब्द सुनाय।।
बालम प्रीति...............तेरे नैन................
अछ हाँ रे बालम, मोर जो नाचे वन-वन में, भई मोर जो नाचे वन-वन में,
नाचत मन में लजाय।। बालम प्रीति...........तेरे नैन..........
अछ हाँ रे बालम, ऐसो डांडिया ला दीजो, भई ऐसो डांडिया ला दीजो।
जो मेरि स्योनि सुहाय।। बालम प्रीति..........तेरे नैन............
अछ हाँ रे बालम ऐसी बिंदिया ला दीजो, जो मेरी कपोली सुहाय।
बालम प्रीति...............तेरे नैन................
अछ हाँ रे बालम ऐसी हंसिया ला दीजो, जो मेरे गले सुहाय।
बालम प्रीति...............तेरे नैन................
अछ हाँ रे बालम ऐसो कजरा ला दीजो, जो मेरो नैन सुहाय।
बालम प्रीति...............तेरे नैन................

अछ हाँ रे बालम ऐसो व्यसना ला दीजो, जो मेरी नकिया सुहाय।
बालम प्रीति...............तेरे नैन................

होली नं0 31

रिमझिम बरसै मेघ आँगनि कीच भरायो रे। २।
तोड़ो पत्ता-ढाक, कान्हाँ दधि खायो रे। रिमझिम बरसे-२।
अहो नदनियाँ बैल ले चढ़ि पूरब जायो रे। रिमझिम बरसे-२।
ढूंढो पूरब देश, जोगिया ना खोजि पायो रे। रिमझिम बरसे-२।
अहो नदनियाँ बैल ले चढ़ि दक्षिण जायो रे। रिमझिम बरसे-२।
ढूंढो दक्षिण देश जोगिया, ना खोजि पायो रे। रिमझिम बरसे-२।
अहो नदनियाँ बैल ले चढ़ि, पश्चिम को जायो रे। रिमझिम बरसे-२।
ढूंढो पश्चिम देश जोगिया, न खोजि पायो रे। रिमझिम बरसे-२।
अहो नदनियाँ बैल ले चढ़ि, उत्तर जायो रे। रिमझिम बरसे-२।
खोजो उत्तर देश जोगिया, ना खोजि पायो रे। रिमझिम बरसे-२।
खोजो चारों देश जोगिया, ना खोजि पायो रे। रिमझिम बरसे-२।
दो पर्वत के बीच जोगिया, धुनी रमायो रे। रिमझिम बरसे-२।
नारि अंचल की ओट जोगिया, लुकायो छुपायो रे। रिमझिम बरसे-२।
बाघम्बर की खाल जोगिया, तले बिछायो रे। रिमझिम बरसे-२।
सरप छुटे दस-बीस जोगिया, भाजि घर आयो रे। रिमझिम बरसे-२।
और नदी सब कीच जोगिया, गंगाजल निर्मल पायो रे। रिमझिम बरसे-२।
भागीरथ को पूत जोगिया, परसन आयो रे। रिमझिम बरसे-२।
चुक चलमोड़ि को साग जोगिया, मीठो बतायो रे। रिमझिम बरसे-२।

होली नं0 32

सजना घर आये कौन दिना, बलमा घर आये कौन दिना। २।
आवत नाहीं एक दिना। सजना घर आये ....
मेरे बालम के तीन शहर हैं, दिल्ली, आगरा अरु पटना। सजना०
अपने बालम को न्यौति बुलाऊ, खान मिसरी अरु खुरमा। सजना०
अपने बालम के चरण दबाऊँ। तेल फुलैल अरु सुरमा। सजना०
अपने बालम को भोजन खिलाऊँ, षट् रस स्वादिष्ट व्यंजना। सजना०।
अपनी बालम को सेज बिछाऊँ, सौड़ा, सफेदा अरु पलंगा। सजना०।
मेरे साजन के बाग बगीचे दाख, नारंगी अरु दाड़िमो। सजना०।

होली नं0 33

नर हरि नर हरि नर हरिया, प्रह्लाद उबारन नर हरिया। ... टेक
सतयुग में हिरण्या कुश के घर, भक्त प्रह्लाद ने जन्म लिया ...
प्रह्लाद उबारण ...... नर हरि नर हरि नर हरिया ....
बालकपन से भक्त प्रह्लाद ने, नाम हरी का याद किया .. प्रह्लाद
ना भज बेटा नाम हरी का, कहना मेरा मान लिया .... प्रह्लाद
ना छोड़ूँ पिताजी नाम हरी का, भक्तों को जिसने तार दिया... प्रह्लाद
तेल कढ़ाई गर्म कराई, पुत्र को उसमें डाल दिया ...... प्रह्लाद
तेल कढ़ाई शीतल हो गई, हरि ने उसमें वास किया .... प्रह्लाद
गिरि पर्वत से फेंका प्रह्लाद को, वायु.वेग बचाय दिया ... प्रह्लाद
समुन्दर फेंका पुत्र प्रह्लाद को, मल्हा बनकर पार किया...प्रह्लाद
नागों की शैय्या में फेंका प्रह्लाद को, जाके अमरत सींच दिया...प्रह्लाद

लोहे को खम्बा गरम कराकर, पुत्र को उसमें बाँध दिया... प्रह्लाद
खम्ब को फाड़ा भक्त को खोला, नरसिंह रूप दिखाय दिया...प्रह्लाद
देलि दरवाजे संध्या काल में, गोद में दुष्ट को मार दिया... प्रह्लाद
त्रेता युग में रावण मारा, मानस रूप दिखाय दिया .... प्रह्लाद
द्वापर युग में कंस को मारा, मोहन रूप दिखाय दिया ... प्रह्लाद
जब-जब पाप भयो जग माही, तब-तब भार उतार दिया...प्रह्लाद
नर हरि नर हरि नर हरिया, प्रह्लाद उबारन नर हरिया।।

होली नं0 34

तल धरती पुर बादल, बादल उपजी बयार।
सूरज को बैरी बादल, बादल बैरी बयार।
माछो को बैरी धीवर, धीवर बैरी जाल।
कौरव पाण्डव दो दल, उपजी बड़ी-२ राड़।
कौरव जुवरा खेलें, कलयुग को परिणाम।
पांडव जुवरा खेलें, सतयुग को परिणाम।
डालो कौरव पाँसा, तुम हो जेठी राठ।
कौरव राजा ने पाँसा डाल्या, पाँसा पड़ि गै जीत।
राज पाठ सब जीत्यो, जीत्यो हस्तिनापुर गाँव।
डालो पाँडव पाँसा, तुम हो छोटी राठ।
पांडव राजा ने पाँसा डाल्या, पाँसा पड़ि गै हार।
राज पाठ सब हारयो, हारयो हस्तिनापुर गाँव।
कपटी शकुनी पाँसा डालै, पासा पड़ि गै जीत।
अरप धरप सब जीत्यो, जीत्यो कुंती को हार।

पांडव पांसा हारे, हारी द्रोपदी नार।
बारह बरस वन में जावे, तेरो गुप्तै वास।
सहदेव पंडित ज्ञानी, द्रोपदी रानी साथ।
द्रोपदी है पांचाली, कीचक कपट विचार।
यहाँ भीमा वहाँ कीचक, युद्ध भयो घमासान।
कीचक मार गिरायो, हाहाकार मचाय।
तेरह बरस पूरे भये, पांडव घर को आय।

होली नं0 35

ओ मुनि नायक साथ, राम जनकपुर आये .... टेक ....
जब तप करते परशुराम जी, क्रोधित हो चले आय राम जनकपुर...
ओ मुनि नायक ......
सुन हो राजा ये मिथिलेषा, क्यों है भीड़ दरबार राम जनकपुर...
सीता स्वयंवर प्रण हमारा, सिद्ध हुआ सब काज राम जनकपुर...
शीश नवाकर बोले रघुवर, मैं हूँ दास तुम्हारा राम जनकपुर ...
परशुराम की क्रोधित वाणी, लक्ष्मण जोश भराय राम जनकपुर.....
छूटत टूटा धनुषहि शिव का, दोष नहीं रघुराय राम जनकपुर...
रे नृप बालक काल के वश में, बोलत तोहि सँभाल राम जनकपुर...
आँखें दिखाता फरसा घुमाता, लक्ष्मण की ललकार राम जनकपुर...
ना हम डरते इस फरसे से, हम रघुवंशी राजा राम जनकपुर...
फरसा हमारा क्षत्री का बैरी, मारे क्षत्री अनेक राम जनकपुर ...
बालकपन से तोड़े हमने ऐसे धनुष अनेक राम जनकपुर ......
लछमन जी को शान्त कियो है, तब बोले रघुनाथ राम जनकपुर....

क्यूं तुम मुनि जी क्रोध कियो है, मुझ को दीजो बताय राम जनकपुर...
जो कोई तोड़े धनुष हमारो, जानूँ मैं अवतार राम जनकपुर...
परशुराम के धनुष को तोड़ा, हो गई जै -जैकार राम जनकपुर...
परशुराम जी राम चरण में, तब वन को चलि जाय राम जनकपुर...
जो मुनि नायक ....।।

होली नं0 36

मेरी लाज बचाओ हरी, द्रोपदी विपद में टेरत है ....
सच्ची नीति के पाण्डव राजा, पापी कौरव राजा हरी। द्रौपदी विपत..
मेरी लाज बचाओ हरी ....
कपटी पासा शकुनी डाले, मुझको दीन्ही हार हरी। द्रौपदी विपत
दुष्ट दुःशासन मध्य सभा में, खींचत चीर ले जाय हरी। द्रौपदी विपत...
धर्म को नाश भयो जग माँहि, पाप रहयो अति छाय हरी। द्रौपदी विपत..
बेबस होके पाण्डव बैठे, कुछ नहीं बोले बात हरी। द्रौपदी विपत..
गज और ग्राह लड़े जल भीतर, वो गज फंद छुड़ाय हरी। द्रौपदी विपत..
दुर्बल गात सुदामा जी के, दरिद्र उनके टारे हरी। द्रौपदी विपत...
द्वारिका वासी श्याम मुरारी, शरण पड़ी हूँ तेरी हरी। द्रौपदी विपत में।
यज्ञ किए जब राजा बलि ने, इन्द्र की इच्छा होय हरी। द्रौपदी विपत..
वामन रूप धरी तब तुमने, पाताल बलि को भेजा हरी। द्रौपदी विपत..
तीन भुवन रावण बस कीन्हीं, जनक सुता सीता को हरी। द्रौपदी विपत..
मानस रूप धरो तब तुमने, राक्षस वंश मिटाय हरी। द्रौपदी विपत..
वेगि खबर लो द्वारिका वासी, अब क्यों देर लगाय हरी। द्रौपदी विपत..
टेर सुनी जब देवकी नन्दन, छोड़ गरुड़ को आये हरी। द्रौपदी विपत..
खींचत-खेंचत चीर दुःशासन, अम्बर ढेर लगाय हरी। द्रौपदी विपत.

खेंचत-खेंचत भुजबल थाके, कोई पार न पाय हरी। द्रौपदी विपत.
द्रोपदी जी की लाज बचाई, अन्तर्ध्यान तब भये हरी। द्रौपदी विपत.

होली नं0 37

मोहन रूप धराय हरी, आये बलि के द्वारे में .... टेक ......
यज्ञ किए थे राजा बलि ने, इन्द्र की इच्छा होय हरी। आये बलि...
मोहन रूप धराय हरी, आये बलि के द्वारे में. .... ।।
बलि छलने को आये त्रिलोकी, सखा बना लाये छोटे हरी। आये बलि.
हाथ में लाठी पैर खड़ाऊँ, बगल में भजन की पोथी हरी। आये बलि..
नहाय धोय बामन बन आये, लम्बी कर लाये धोती हरी। आये बलि..
छोटा रूप धरा नारायण, सिर पर बजरंग टोपी हरी। आये बलि..
द्वारे बलि के सभा बैठी, बैठे बामन रूप हरी। आये बलि...
जो तुम माँगे माँग लो बामन, जो मन इच्छा होय हरी। आये बलि...
जो हम माँगे ना दे राजा, वचन अकारथ जाय हरी। आये बलि...
एक दो बच्या, दो-दो बच्या, त्रिकाली बच्या देई हरी। आये बलि....
तीन पग धरती दे राजा, ता में भजन की पोथि हरी। आये बलि....
बामन तूने कुछ नहीं माँगा, तेरी किस्मत खोटी हरी। आये बलि....
भली सभा राजन की बैठी, बात करें एक छोटी हरी। आये बलि....
धन दौलत की कमी नहीं है, मैं राजा तू सन्यासी हरी। आये बलि....
दीन्हों दान बली ने क्षण में, अचरज रूप धराय हरी। आये बलि....
तीन भुवन दो पग से नापे, तिसरो कहाँ पग राखो हरी। आये बलि....
तिसरो पैर बलि के सिर पर, पाताल बलि को भेजा हरी। आये बलि...
चरण कमल से गंगा निकसी देवन फूल बरसाय हरी। आये बलि....

होली नं0 38

मैं ना जिऊँ रघुनाथ बिना, जैसे जल बिन मछली तड़प तड़प।
चौथे पन में राजा दशरथ, राम को देवे राज भरत प्यारे .....
हाट बाट सब नगर सजाया, ऋषि मुनि देव सब आय। भरत प्यारे..
आई मन्थरा राज भवन में, कैकेयी को समझाय। भरत प्यारे....
कल को राम सिंहासन होवे, भरतहि सेवक होय। भरत प्यारे....
जाकर रानी कोप भवन में, विकटहि रूप धराय। भरत प्यारे.....
आये राजा रानी निवास में, कैकेयी रूप विकराल। भरत प्यारे...
सुन री मेरी प्राण प्यारी, क्यों है मन से मलीन। भरत प्यारे.....
जाओ यहाँ से ना बोलो हमसे, दूँगी मैं प्राण को त्याग। भरत प्यारे...
जो तू माँगे माँग ले रानी, जो मन इच्छा होय। भरत प्यारे.....
राम कसम मैं तुमसे कह दूँ, हम रघुवंशी राज। भरत प्यारे....
दो वर मेरे जो थे तुमसे उनको दे दो आज। भरत प्यारे....
राम बनवास दो चौदह बरस को, भरत को दे दो राज। भरत प्यारे....
दशरथ राजा मूर्छित हो गये, हा हा राम पुकार। भरत प्यारे....
मैं ना जिऊँ रघुनाथ ....।।

होली नं0 39

लेखी टलती नाँहि, जो विधि लेखी ब्रह्मा ने।
मिटने की नाँहि, धन्य करम तेरी लीला .... टेक ....
ज्ञात हुआ जब रामचन्द्र को, आये पिता के पास।। धन्य करम...

ओ लेखी टलती नाँहि, धन्य.........

व्याकुल क्यों हैं पिता जनजी, आये पिता के पास।। धन्य करम

तुमको वनवासै राजा ने दीन्हो, जाओ वन को राम।। धन्य करम

ज्ञात हुआ जब सीता लछमन, दोनों लागे साथ।। धन्य करम..

ना चल सीता जन चलियो है, वन में कष्ट अनेक।। धन्य करम..

बन में रहते शेर निशाचर, वन में वन खाय।। धन्य करम ..

जो तुम खावे सो हम भावे, छोडूँ न स्वामि को साथ।। धन्य करम

राज मुकुट सब वस्त्र उतारे, मुनियन वेश बनाय।। धन्य करम..

माता पिता से आज्ञा माँगी, तीनो वन को जाय।। धन्य करम..

आज ही राम सिंहासन बैठे, आजै को बनवास।। धन्य करम ..

अवध पुरी के सब पुरवासी, आँसू नदिया बहाय।। धन्य करम

राम लखन सियावन को चले, जब अवध में छा गयो शोक।। धन्य करम

आगे-आगे राम चलत है, पीछे लछमन भाई।। धन्य करम ..

उनके बीच में सीता चलत है, मलमल पैर उठाय।। धन्य करम...

होली नं0 40

राम लछमण के हाथ धनुष भारी, राम लछमण के हाथ धनुष भारी

चलते-चलते राम लछिमन, पहुँचे गंगा तीर।। राम लछिमन के हाथ.

केवट भैया नैया लाओ, हमको उतारौ पार।। राम लछिमन के हाथ..

राम लक्ष्मण पार किए तब, धूल चरण सिर नाय।। राम लछिमन के हाथ

एक बन नाग्यो, दूजो बन नाग्यो, चित्रकूट में जाय।। राम लछिमन के हाथ

तुलसीदास को आशा राम की, हरि चरणन बलिहारि।। राम लछिमन के हाथ

तुलसीदास जी चन्दन घिसत, तिलक लेत रघुवीर।। राम लछिमन के हाथ.

चलते-चलते राम लक्ष्मण पंचवटी में वास।। राम लछिमन के हाथ.

कास कूस की कुटिया बनाई, फुलवारी ले हो लगाय।। राम लछिमन के हाथ..

सुन्दर रूप धरी शूर्पणखाँ, राम के सम्मुख जाय।। राम लछिमन के हाथ..

मुझ जैसी नारी है ना जग में, मुझको वर लो राम।। राम लछिमन के हाथ..

संग हमारी जनक दुलारी, जाओ लक्ष्मण पास।। राम लछिमन के हाथ..

शूर्पणखाँ तब लछमन सम्मुख नाक देय कटवाय।। राम लछिमन के हाथ...

रोती-रोती शूर्पणखाँ तब, गई खर-दूषण पास।। राम लछिमन के हाथ..

आय खर-दूषण सेना लेकर, उनको दीन्हो मार।। राम लछिमन के हाथ..

कपटी मृग मारिच बनाकर पंचवटी पठवाय।। राम लछिमन के हाथ..

सुन्दर मृगा सीता के आगे, सीता के मन भाय।। राम लछिमन के हाथ...

इस मृगा को सुन्दर चमड़ा, मुझ को दे गढ़वाय।। राम लछिमन के हाथ..

यह तो मृगा ना है प्यारी, कपटी रूप धराय।। राम लछिमन के हाथ...

रघुवर ने तब बाण उठाया, मृगा जावे दूर।। राम लछिमन के हाथ..

जब मृगा ने लक्ष्मण बोला, सीता जी सुनि पाय।। राम लछिमन के हाथ...

लक्ष्मण तुमको स्वामी पुंकारें, उन पर संकट होय।। राम लछिमन के हाथ..

उन पर संकट ना होवे माता, वो हैं त्रिलोकी नाथ।। राम लछिमन के हाथ...

लक्ष्मण तुमने कपट विचारा, जानि गई मैं आज।। राम लछिमन के हाथ..

तब लक्ष्मण ने भस्महि खींचा, जावे रामहि ओर।। राम लछिमन के हाथ...

योगी वेश धरो रावण ने, पंचवटी में आय।। राम लछिमन के हाथ..

अलख-अलख कर द्वार खड़ो है, भिक्षा दे ओ माय।। राम लछिमन के हाथ..

सीता जी तब भिक्षा लाई, रावण सीता ले जाय।। राम लछिमन के हाथ..

होली नं0 41

खोजें लछमन राम, सीता किसने चुराई .... टेक ....

चौं चौं करते जटायु बोले, पंख दिए कटवाय। सीता किसने...

खोजें लछमन राम, सीता ....।

जूठे बेर शबरी के खाये, रुचि-रुचि भोग लगाय। सीता किसने

घूमत फिरत अंजलि पुत्रजी, आन मिले रघुराय। सीता किसने..

को तुम श्यामल गौर शरीरा, क्षत्रिय रूप धराय। सीता किसने

राम लक्ष्मण दशरथ नन्दन, पंचवटी में आय। सीता किसने...

संग हमारी जनक दुलारी, रावण घर ले जाय। सीता किसने..

पंपापुर में बाली सुग्रीवा, आपस में लड़वाय। सीता किसने....

सुग्रीव कपि की नारी रोंमा, बाली की ठकुराई। सीता किसने..

बाली को मारा, सुरलोक भेजा, सुग्रीव राजा बनाय। सीता किसने

पंपापुर की वानर सेना, सीता खोज लगाय। सीता किसने.....

हनुमत योद्धा दक्षिण दिशा को, लंकागढ़ को जाय। सीता किसने

लंकागढ़ में भक्त विभीषण, लंका भेद बताय। सीता किसने...

जानकी माता अशोक बाग में, राम को ध्यान धराय। सीता किसने

आगे पवन सुत अशोक बाग में, पेड़ कदम्ब पर जाय। सीता किसने

हनुमन्त ने तब अँगूठी डाली, सीता गोद में जाय। सीता किसने

पेड़ कदम से उतरे पवन सुत, सीता के आगे जाय। सीता किसने

अंजनि पुत्र हूँ राम को सेवक, मुझको दूत पठाय। सीता किसने

भूख लगी है फल को खाऊँ, बाग दियो उखड़ाय। सीता किसने

खबर भई जब असुर नगर में, हनुमन्त बाँध ले जाय। सीता किसने

हनुमन्त पूँछ में आग लगायो, सारी लंका जलाय। सीता किसने

आये पवन सुत सागर तट पर, पूँछ दिई बुझवाय। सीता किसने..

सीता जी से कंगन लाये, राम के दल में आय। सीता किसने...

खोजें लछमन - राम, सीता किसने चुराई।।

होली नं0 42

मथुरा में खेलें एक घड़ी। मथुरा में खेलें एक घड़ी।।

काहे के हाथ में डमरू विराजे, काहे के हाथ में लाल छड़ी।

मथुरा में खेलें एक घड़ी।।

राधा के हाथ में डमरु विराजे, कृष्ण के हाथ में लाल छड़ी।

मथुरा में खेलें एक घड़ी।।

काहे के शीष में मुकुट विराजे, काहे के शीश में है पगड़ी।

मथुरा में खेलें एक घड़ी।।

राधा के शीश में मुकुट विराजे, कृष्ण के शीश में है पगड़ी।

मथुरा में खेलें एक घड़ी।।

काहे के कानन कुण्डल सोहे, काहे के शीश में मोतियन लड़ी।

मथुरा में खेलें एक घड़ी।।

कृष्ण के कानन कुण्डल सोहे, राधा के शीश पर मोतियन लड़ी।

मथुरा में खेलें एक घड़ी।।

काहे के हाथ में मजीरा सोहे, काहे के हाथ में ताल खड़ी।

मथुरा में खेलें एक घड़ी।।

राधा के हाथ में मजीरा सोहै, कृष्ण के हाथ में ताल खड़ी।

मथुरा में खेलें एक घड़ी।।

होली नं0 43

बलमा घर आये फागुन में, बलमा घर आये फागुन में
जबसे पिया परदेश सिधारे, आम लगाये बागन
बलमा घर आये फागुन में।।
चैत मास में वन फल पाके, आम जो पाके जेठ
बलमा घर आये फागुन में।।
गऊ को गोबर आँगन लिपायो, मंगल काज करावन
बलमा घर आये फागुन में।।
प्रिय बिन बसन रहे सब मैले, चोली चादर भिजावन
बलमा घर आये फागुन में।।
भोजन पान बनाये मन से, लड्डू पेड़ा सावन
बलमा घर आये फागुन में।।
सुन्दर तेल फुलेल लगायो, स्योनि श्रृंगार करावन
बलमा घर आये फागुन में।।
बसन आभूषण साज सजाये, लागि रही पहिना वन
बलमा घर आये फागुन में, बलमा घर आये फागुन में

होली नं0 44

आज हाँ जनकपुर प्रण भयो, प्रण भयो राजा राम जनकपुर प्रण भयो।
नक राजा ने पातिय लेखी, भेजी चारो ओर जनकपुर ....
ार दिशा के भूपति आये, बड़े-बड़े बलवान जनकपुर ....
श्वामित्र महामुनि आये, आये लछमन राम जनकपुर ....
ीता स्वयंवर सभा बैठी, बैठे सबहि समाज जनकपुर ....
ंकागढ़ से आयो दशानन, पीछे बाणासुर आयो जनकपुर .....
ुन हो राजा ये मिथिलेशा, जल्दी सिया को लाओ जनकपुर.....
ण में कर दूँ धनुष के टुकड़े, सीता ब्याह ले जाऊँ जनकपुर...
ल को दिखाता धनुष उठाता, धनुषै हिलता नाहि जनकपुर ....
ीला बाणासुर सुन रे दशानन, ये है शिव को पिनाक जनकपुर..
ाकाशवाणी सुनि तब रावण, लौटि के लंका जाय जनकपुर ....
र कोई राजा धनुष उठावे, तिल भर ऊठत नाहि जनकपुर ....
नक राजा को सोच भयो तब, सीता रह गई क्वारि जनकपुर ....
ा कोई योद्धा है जग माही, निज-निज घर को जाइ जनकपुर.....
ोलि जनक तब अनुचित वाणी, लछमन जोश भराय जनकपुर...
ीती मुझको राम की आज्ञा, धनुष के खण्ड बनाय जनकपुर...
छमन जी को शान्त कियो तब बोले राजा राम जनकपुर .....
ौशिक मुनि ने आज्ञा दीन्ही, तोड़ो राम पिनाक जनकपुर .....
नुष मंच में गये रघुनाथा, श्यामल गौर किशोर जनकपुर .....
ण में उठावें धनुष को राम जी खण्ड किए दो चार जनकपुर ....
ीता जी जब माला लाई, राम गले पहनाय जनकपुर ....

जब रघुवर ने धनुष को तोड़ा, हो गई जै-जैकार जनकपुर ...
अछ हाँ जनकपुर प्रण भयो, प्रण भयो राजा राम जनकपुर प्रण भयो।

होली नं0 45

श्याम मुरारी के दर्शन को जब विप्र सुदामा आये हरी
विप्र सुदामा द्वार खड़े हैं, पूछत कृष्ण कहाँ है हरि। विप्र सुदामा०
हांजिर वासी गये जब भीतर, द्वार खड़े हैं विप्र हरि। विप्र सुदामा०
बालापन के मित्र हमारे, रोको नहीं क्षण मात्र हरि। विप्र सुदामा०
बाँह पकड़ के निकट बैठाये, रुक्मणी चरण दबाए हरि। विप्र सुदामा०
तीन मुठ्ठी भर तंदुल लाये, देने में लाज आवे हरि। विप्र सुदामा०
देखत पोटली खेचि लई हैं, रुचि-रुचि भोग लगाये हरि। विप्र सुदामा०
मांगो हे विप्र जो मन भावे, जो कुछ इच्छा होवे हरि। विप्र सुदामा०
अपने मुख से मैं नहीं माँगू, जो मन इच्छा दीजै हरि। विप्र सुदामा०
कांस बांस की झोपड़ी बनी, ब्रह्मपुरी सब रत्न भरो। विप्र सुदामा०
दुःख दरिद्र सब दूर कियो है, सुख सम्पद सब दीजै हरि। विप्र सुदामा०
हरि के देने में विलम्ब न होवे, लेने में देर न लागै हरि। विप्र सुदामा०

होली नं0 46

अरे हाँ रे गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे,
चल कहो तो यहीं रम जाएँ।। टेक।।

ओ गोरी तुम स्योनिय हो जाओगी,
हम पगड़िया हो जाएँ। गोरी नैना .....।
अरे हाँ गोरी झलकि-झलकि रस खाय
हो गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे।।
अरे हाँ गोरी तुम कपाली हो जाओगी,
हम बिंदिया हो जाय। गोरी नैना .....।
कपालिय में झलकि-झलकि रस खाय,
हो गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे।।
तुम अखियाँ हो जाओगे, हम कजरा हो जाय।
गोरी बैठी तुम्हारी अखियन में। गोरी नैना..।
अखियन में झलकि-झलकि रस खाय।
हो गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे।।
तुम नकिया हो जाओगी, हम व्यसना हो जाय,
गोरी बैठी तुम्हारी नकियन में। गोरी नैना..।
झलकि-झलकि रस खाय,
हो गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे।।
तुम कुईया हो जाओगे, हम डोलना हो जाय,
गोरी बैठी तुम्हें कुईयाँ में। गोरी नैना..।
झलकि-झलकि रस खाय,
गोरी नैना तुम्हारे रसा भरे।।
तुम पिंजरा हो जाओगी, हम सुवना हो जाय,
गोरी बैठी तुम्हारे पिंजरन में। गोरी नैना..।
भली-भली बात सुनाये गोरी,
नैना तुम्हारे रसा भरी।।

तुम तौलिय बन जाओगी, हम चमचा हो जाय,

गोरी बैठी तुम्हारे तौलियन में। गोरी नैना..।

तौलिय में कटोरी - कटोरी रस खाय,

गोरी नैना तुम्हारे रस भरी।।

तुम गलिया बन जाओगी, हम हँसिया हो जाय।

गोरी बैठी तुम्हारे गलिया में। गोरी नैना..।

झलकि-झलकि रस खाय,

गोरी नैना तुम्हारे रसा भरी।।

तुम छतिया बन जाओगी, हम अँगिया बन जाय,

गोरी बैठी तुम्हारे छतियन में। गोरी नैना..।

मरोड़ि-मरोड़ि रस खाय, गोरी नैना तुम्हारे रसा भरी।।

झलकि-झलकि रस खाय, गोरी नैना तुम्हारे रसा भरी।

चल कहो तो यहीं रम जाएँ, अरे हाँ रे गोरी नैना तुम्हारे रसा भरी।।

होली नं0 47

रंग बरसे भीगे चुनर वाली रंग बरसे।

सोने की थाली में भोजन परोसा।

खाए गोरी का यार बलम तरसे। रंग बरसे।।

लौंगा इलायची का बीड़ा लगाया,

पीये गोरी का यार बलम तरसे। ओ रंग बरसे।।

बेला चमेला का सेज लगाया,

सोये गोरी का यार बलम तरसे। ओ रंग बरसे।।

होली नं0 48

वन से आये राम चलो दर्शन कर आयें ठाकुर के।

राम जी आये लछिमन आये, आई सीता माई।। चलो दर्शन।।

पहले मिले भाई भरत को, फिर कौशल्या माई।। चलो दर्शन।।

घर-घर मिले अयोध्या वासी, पीछे कैकेयी माई।। चलो दर्शन।।

जब ही राम सिंहासन बैठे, कहो लंक की बात।। चलो दर्शन।।

मातु कौशल्या पूछन लागी, कैसे तोड़ी लंक।। चलो दर्शन।।

घाट बाट लछिमन ने रोके, औघट रोके राम।। चलो दर्शन।।

दरा दरवाजे अंगद रोके, कूद पड़े हनुमान।। चलो दर्शन।।

रावण मारे, अहिरावण मारे, दिये विभीषण राज।। चलो दर्शन।।

शक्ति बाण लगो लछिमन को, शोर भयो दल भारी।। चलो दर्शन।।

द्रोणा गिरि पर्वत ले आये, भोर होत ना हीं पाय।। चलो दर्शन।।

अहिरावण की भुजा उखाड़ी, बैठी रहो गढ़ माही।। चलो दर्शन।।

होली नं0 49

करि ले अपनो ब्याह देवर हमरो भरोसो जन करिये।

आज हाँ रे देवर अरज करू पय्या पड़ूँ, हम पर घर की नार।। देवर हमरो..

आज हाँ रे देवर यह रीति जग में नाहीं, दो-दो पुरुष एक नारि।। देवर हमरो..

आज हाँ रे देवर यह सब जग में चलि आयो, एक पुरुष दो नारि।। देवर हमरो..

आज हाँ रे देवर चैत मास टेसू फूले, लागत नीको सुहाय।। देवर हमरो..

आज हाँ रे देवर मोर जो बोले वन-वन में, मीठो शब्द सुनाय।। देवर हमरो..

आज हाँ रे देवर कोयल बोले पनघट में, लागत अति ही सुहाय।। देवर हमरो..

आज हाँ रे देवर हमने बुलाये अकेले, तू लाये जन चार।। देवर हमरो..

अछ हाँ रे देवर हमने बुलाये बागा में, तू आयो घरबार।। देवर हमरो..
अछ हाँ रे देवर हमने बुलाये साँझ सवेरे, तू आयो अधिरात।। देवर हमरो..
अछ हाँ रे देवर डंडिया ऐसो लाइये, जो मेरी स्योंदि सुहाय।। देवर हमरो..
अछ हाँ रे देवर बिंदिया ऐसो लाईये, जो मेरी कपोली सुहाय।। देवर हमरो..
अछ हाँ रे देवर कजरा ऐसो लाईये, जो मेरी अंखियाँ सुहाय।। देवर हमरो..
अछ हाँ रे देवर व्यसना ऐसो लाईये, जो मेरी नकिया सुहाय।। देवर हमरो..
अछ हाँ रे देवर हँसिया ऐसो लाईये, जो मेरी गलिय सुहाय।। देवर हमरो..
अछ हाँ रे देवर चुड़ियाँ ऐसो लाईये, जो मेरी बय्याँ सुहाय।। देवर हमरो..
अछ हाँ रे देवर अँगिया ऐसो लाईये, जो मेरी छतिय सुहाय।। देवर हमरो..
अछ हाँ रे देवर पटका ऐसो लाईये, जो मेरी कडोली सुहाय।। देवर हमरो..
अछ हाँ रे देवर लहंगा ऐसो लाईये, जो मेरी जँगिया सुहाय।। देवर हमरो..
अछ हाँ रे देवर बिछिया ऐसो लाईये, जो मेरी अँगुली सुहाय।। देवर हमरो..
जन करिये तू करले अपनो ब्याह देवर हमरो भरोसो जिन करिये।।

होली नं0 50

को खेलें नन्दलाल होरी को खेलैं।
पाँच बरस के कुँवर कन्हैया, झूमर खेलन जाय।। होरी को खेलैं।।
कौन गलिन में खड़ो रहत है, ओ जसोदा को लाल।। होरी को खेलैं...।
नन्द महर की गय्यां चुँगावै, मुरली वेनु बजाय।। होरी को खेलैं...।
घाट-बाँट में ठाड़ो रहत है, हमसे माँगे दान।। होरी को खेलैं...।
यमुना के नीर-तीरे धेनु चुँगावै, कम्बर काँ हो डार।। होरी को खेलैं..।
कहाँ के तुम ग्वाल गुजरिया, कँह दधु बेचन जाय।। होरी को खेलैं..।
मथुरा के हम ग्वाल गुजरिया, गोकुल दधु बेचन जाय।। होरी को खेलैं..।

इस गोड़िय को दान पड़त हैं, दान दिये घर जाय।। होरी को खेलैं..।
हमने जो ला दी दही की मटकिया, दान कहाँ को लेय।। होरी को खेलैं..।
कहाँ के तुम दानी हुए हो, कहाँ के घटवान।। होरी को खेलैं..।
मथुरा के हम दानी हुए हैं, यमुना के घटवान।। होरी को खेलैं..।
कबसे लड़के दानी हुए हैं, कबसे लीनो दान।। होरी को खेलैं..।
बालेपन से दानी हुए हैं, सब दिन लीनू दान।। होरी को खेलैं..।
ना हम ला दें लौंग सुपरिया, ना परवते की सौंट।। होरी को खेलैं..।
हमने जो ला दी दही आपनो, दान कहाँ को लेय।। होरी को खेलैं..।
नाम दहिय को दान महिय को, दान जो वन को होय।। होरी को खेलैं..।
दान दे गूजर दान हमारो, दान दिये घर जाय।। होरी को खेलैं..।
सोलह सौ गुजर होरी, खेलैं कुन्ज गलिन के बीच।। होरी को खेलैं..।
लाल गाल पर चुम्मा मारे, ओ यशोदा को लाल।। होरी को खेलैं..।
काहिन की तेरी अँगिया फाड़ी, काहिन तोड़ो हार।। होरी को खेलैं..।
मखमल की मेरी अँगिया फाड़ी, मोतियन तोड़ो हार।। होरी को खेलैं..।
कै मोलै की अँगिया फाड़ी, कै मोलैं को हार।। होरी को खेलैं..।
सौ लाख की मेरी अँगिया फाड़ी, अनमोलो यो हार।। होरी को खेलैं..।
कौन शहर की अँगिया फाड़ी, कौन शहर को हार।। होरी को खेलैं..।
मथुरा शहर की अँगिया फाड़ी, गोकुल को यो हार।। होरी को खेलैं..।
होरी को खेलै नन्दलाल होरी को खेलैं।।

होली नं0 51

ओ मोहन नन्दलाल बरसाने वन आये।। टेक।।
बरसाने की गूजरी, हम दधि बेचन जाय, बीच मिले नन्दलाल।
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
कहाँ की तुम ग्वाल गुजरिया, कहाँ दधि बेचन जाय, कहाँ मिलो नन्दलाल।
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
मथुरा की हम ग्वाल गुजरिया, गोकुल दधु बेचन जाय, ताँहि मिलो नन्दलाल।
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
ना दे गूजर दान हमारो, दान दिये घर जाय, बरसाने वन आये
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
कब से लड़के दानी हुए हैं, कब से लीनो दान, बरसाने वन आये
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
बालेपन से हम दधि बेचैं, कबहुँ न करियो दान, बरसाने वन आये।
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
बालेपन से दानी हुए हैं, सब दिन लीनो दान।। ओ मोहन नन्दलाल
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
कहाँ के तुम दानी हुए हो, कहाँ के घटवान, बरसाने वन आये। हो
दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
मथुरा के हम दानी हुए हैं, यमुना के घटवान।। बरसाने वन आये।
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
हमने जो ला दी दहि की मटकिया, दान काहे को लेय बरसाने वन आये।
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
मारूँ मुरली, तोड़ूँ मटकी, दही दूध बिखराय, बरसाने वन आये।
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
दही तुम्हारो खट्टो-मीठो, छाँस गयी अगलाय, बरसाने वन आये।

हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
कै लख की यो अंगिया फाड़ी, कै लख को यो हार, बरसाने वन आये।
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
नौ लख की यो अंगिया फाड़ी, अनमोलो यो हार, बरसाने वन आये।
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..
बल्ली मार तेरो मटका फोड़ूँ, पल्ली पार दधि खाय, बरसाने वन आये।
हो दय्या दे हो लुटाय बरसाने वन आये।। ओ मोहन नन्दलाल ..

होली नं0 52

मत मारो मोहन मोको पिचकारी लहरो देवर दे गारी।
मत मारो मोहन मोको पिचकारी।।
भरी पिचकारी सन्मुख मारी, भीग गई डंडिया सारी।। मत मारो।।
जेठ सुने मोको रहने न देंगे, ससुर सुनें तो मोको दे मारी।। मत मारो।।
सास सुने तो बहुत रिसावे, बलम सुने तो दे मारी।। मत मारो।।
ननद सुने तो मोको खाने न दे, गाँव सुने तो हँस डारी।। मत मारो।।
भरी पिचकारी सन्मुख मारी, लाल भई बिंदिया सारी।। मत मारो।।
भरी पिचकारी ऐसी मारी, कजरा बहाय दई सारी।। मत मारो।।
भरी पिचकारी ऐसी मारी, व्यसना टूट गई सारी।। मत मारो।।
भरी पिचकारी ऐसी मारी, हँसिया भीग गयी सारी।। मत मारो।।
भरी पिचकारी ऐसी मारी, भीग गयी अँगिया सारी।। मत मारो।।
भरी पिचकारी ऐसी मारी, टूट गयी पटका सारी।। मत मारो।।
भरी पिचकारी ऐसी मारी, भीग गयी लहँगा सारी।। मत मारो।।
भरी पिचकारी सन्मुख मारी, टूट गयी बिछिया सारी।। मत मारो।।
मत मारो मोहन मोको पिचकारी।। लहरो देवर दे गारी।।

होली नं0 53

बृजमण्डल देश देखो रसिया। बृजमण्डल हो।। २।।
तेरे बिरज में मोर बहुत हैं-कूकत मोर फटे छतिया।
बृजमण्डल हो। बृजमण्डल देश देखो रसिया। बृजमण्डल हो।।
तेरे बिरज में चोर बहुत हैं, घूँघट ओट हँसै रसिया।
बृजमण्डल हो। बृजमण्डल देश देखो रसिया। बृजमण्डल हो।।
तेरे बिरज में नारि बहुत हैं, गोरी-गोरी नारि सुघड़ रसिया।
बृजमण्डल हो। बृजमण्डल देश देखो रसिया। बृजमण्डल हो।।
तेरे बिरज में गाय बहुत हैं, छोटी-मोटी गाय सुघड़ बछिया।
बृजमण्डल हो। बृजमण्डल देश देखो रसिया। बृजमण्डल हो।।
तेरे बिरज में दूध बहुत हैं, पीकर दूध भई पठिया।
बृजमण्डल हो। बृजमण्डल देश देखो रसिया। बृजमण्डल हो।।
तेरे बिरज में धान बहुत हैं, फटके नारि कुटै रसिया।
बृजमण्डल हो। बृजमण्डल देश देखो रसिया। बृजमण्डल हो।।
तेरे बिरज में भात बहुत है, पकावै नारि खावे रसिया।
बृजमण्डल हो। बृजमण्डल देश देखो रसिया। बृजमण्डल हो।।
तेरे बिरज में फूल बहुत हैं, टीपै नारि सूंघैं रसिया।
बृजमण्डल हो। बृजमण्डल देश देखो रसिया। बृजमण्डल हो।।
तेरे बिरज में गीत बहुत हैं, गावें नारि सुनें रसिया।
बृजमण्डल हो। बृजमण्डल देश देखो रसिया। बृजमण्डल हो।।

होली नं0 54

हरिय पंख मुख लाल सुवा बोलिय जन बोले बागा में।।
कहाँ से आये बादल रेखा, कहाँ भयो घनघोर सुवा बोलिय जन बोले..
पूरब से आये बादल रेखा, पश्चिम भयो घनघोर सुवा बोलिय जन बोले..
जन धन बरसे बादल रेखा, रिमझिम बरसे मेघ सुवा बोलिय जन बोले..
इत जन बरसे उत जन बरसे, पिया गये परदेश सुवा बोलिय जन बोले..
काहे की ये सर स्योंदिय हो, काहे के हे पाग सुवा बोलिय जन बोले..
गोरी जो भीगे सर स्योंदिय हो, पिया के मल-मल पाग सुवा बोलिय जन बोले..
कहाँ सुखाऊँ सर स्योंदिय हो, कहाँ पिया के पाग सुवा बोलिय जन बोले..
धूप सुखाऊँ सर स्योंदिय हो, छाँव पिया की पाग सुवा बोलिय जन बोले..
काहे के हाथ पातिय लिख भेजूँ, काहे के हाथ संदेश सुवा बोलिय जन बोले..
कागा के हाथ पातिय लिख भेजूँ, सुवा सन्देश ले जाय सुवा बोलिय जन बोले..
हरिय पंख मुख लाल सुवा बोलिय जन बोले बागा में बोलिय जन बोले..

होली नं0 55

आज हाँ रे बालम मस्त महीना फागुन को।
बोलिय ले हो धुमार बालम मस्त महीना फागुन को।।
आज हाँ रे बालम मोर जो बोले पनघट में, नाचत खूब सुहाय।
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।
आज हाँ रे बालम वन-वन फूले टेसूवा, लागत नीको सुहाय।
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।
आज हाँ रे बालम कोयल बोले वन-वन में, मीठो शब्द सुहाय।
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।

अछ हाँ रे बालम डंडिया ऐसो लाईये, जो मेरी स्योदिं सुहाय
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।
अछ हाँ रे बालम बिंदिया ऐसो लाईये, जो मेरी कपोली सुहाय
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।
अछ हाँ रे बालम कजरा ऐसा लाईये, जो मेरी अंखियाँ सुहाय
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।
अछ हाँ रे बालम व्यसना ऐसो लाईये, जो मेरी नकिया सुहाय
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।
अछ हाँ रे बालम हँसिया ऐसो लाईये, जो मेरी गलिय सुहाय
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।
अछ हाँ रे बालम चूड़ियाँ ऐसो लाईये, जो मेरी वय्याँ सुहाय।
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।
अछ हाँ रे बालम अँगिया ऐसो लाईये, जो मेरी छतिया सुहाय।
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।
अछ हाँ रे बालम पटका ऐसो लाईये, जो मेरी कडोलि सुहाय।
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।
अछ हाँ रे बालम लहंगा ऐसो लाईये, जो मेरी अंगियाँ सुहाय।
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।
अछ हाँ रे बालम बिछिया ऐसो लाईये, जो मेरी अँगुली सुहाय।
बालम मस्त महीना फागुन को .... बालम।।

होली नं0 56

ले चल ले चल रंगले महल तेरी वंशी ने मेरो मन मोह लियो,
मोह लियो, मोह लियो, तेरी वंशी ने मेरो मन मोह लियो।।
कौन पुरी में जनम लियो है। कौन पुरी अवतार राधा।। तेरी वंशी।।
मथुरा पुरी में जनम लियो है, गोकुल को अवतार भयो।। तेरी वंशी।।
कौन की कोख में जनम लियो है, कौन खिलाये गोद।। तेरी वंशी।।
देवकी कोख में जन्म लियो है, यशोदा गोद खिलाय राधा।। तेरी वंशी।।
गिरि गोबर गोपाल गजाधर, गजपति ताको नाम राधा।। तेरी वंशी।।
काहिन की तेरी बाँसुरी कन्हैया, काहिन को तेरो वीन राधा।। तेरी वंशी।।
हरे बाँस की बाँसुरी कन्हैया, लोहे को मेरो वीन राधा।। तेरी वंशी।।
कै वन की तेरी बाँसुरी कन्हैया कै वन को तेरो वीन राधा।। तेरी वंशी।।
मधुबन की तेरी बाँसुरी कन्हैया, बाँसुरिया सुन कन्हैया।। तेरी वंशी।।
कौन शहर की बाँसुरी कन्हैया, कौन शहर को वेन राधा।।तेरी वंशी।।
मथुरा शहर की बाँसुरी कन्हैया, गोकुल को तेरो वीन राधा।।तेरी वंशी।।
कै सुर बाजे बाँसुरी कन्हैया, कै सुर बाजे वीन राधा।। तेरी वंशी।।
नौ सुर बाजे बाँसुरी कन्हैया, नौ सुर बाजे मेरो बीन राधा।।तेरी वंशी।।
कितने टका की तेरि बाँसुरी कन्हैया, कितने टका तेरो बीन राधा।।तेरी वंशी।।
नौ लख की मेरी बाँसुरी कन्हैया, अनमोलो मेरो वीन राधा।।तेरी वंशी।।
कौन बजावे बाँसुरी कन्हैया, कौन बजावे वीन राधा।। तेरी वंशी।।
कृष्ण बजावे बाँसुरी कन्हैया, राधा बजावे वीन राधा।। तेरी वंशी।।

होली नं0 57

तुम मानो हो यमराज बलम के साथ चलेगी सावित्री।
कौन राजा की पुत्री सावित्री, कौन पुरुष की नारि।। बलम के साथ।।

अश्वपति की पुत्री सावित्री, सत्यवान की नारि।। बलम के साथ
लालन-पालन अश्वपति कीन्हा, हो गयी ब्याहन योग्य।। बलम के साथ
देश-देश में राजा घूमे, वर खोजन को जाय।। बलम के साथ
योग्य वर राजा नहिं पाये, लौटे घर को निराश।। बलम के साथ
तब सावित्री को आज्ञा दीनी, वर खोजन खुद जाय।। बलम के साथ
सावित्री तब रथ पर बैठी, वर खोजन को जाय।। बलम के साथ
ज्योहीं घने जंगल से गुजरी, सुन्दर युवक को देख।। बलम के साथ
तब सावित्री ने रथ को रोका, जाय पुरूष के पास।। बलम के साथ
शाल्व देश के राजा पिता हैं, उग्रसेन है नाम।। बलम के साथ
मेरे पिता के राज्य को सारा, उनसे लिया है छीन।। बलम के साथ
माता-पिता का लालन-पालन, लकड़ी बेच के होय।। बलम के साथ
सावित्री ने ठान ली तब, ब्याह करूँ निज साथ।। बलम के साथ
सावित्री तब घर को लौटी, हर्षित राजा देख।। बलम के साथ
जब सावित्री ने हाल बताये, चकित भये मुनिराज।। बलम के साथ
एक बरष की आयु है उनकी, नारद मुनि बतलाय।। बलम के साथ
सावित्री को राजा समझाय, ब्याह न कर निज साथ।। बलम के साथ
आर्य कन्या का धर्म यही है, ब्याह करे एक बार।। बलम के साथ
मुनि की बात कभी न भूली, गिनने लगी दिनवार।। बलम के साथ
लकड़ी काटन पती चले जब, लागी सावित्री साथ।। बलम के साथ
ज्यों ही पेड़ में चढ़े पती जी, सिर में चक्कर आय।। बलम के साथ
पेड़ से उतर के नीचे आये, धरती में मूर्छित होय।। बलम के साथ
पति सिर अपने गोद में रखकर, सहलाने लगी है हाय।।बलम के साथ
तब सावित्री ने अजब ही देखा, छाया खड़ी है पास।। बलम के साथ
भैंस सवारी साथ लिए हैं, पास खड़े यमराज।। बलम के साथ
तेरे पति के प्राण को लेने, आया हूँ यमराज।। बलम के साथ
पति के प्राण हरे जब यम ने, लागी सावित्री साथ।। बलम के साथ

पलट के यम ने पीछे देखा, लागी सावित्री है साथ।। बलम के साथ।।
यम ने उसको बहुत समझाया, सावित्री नहिं मानी।। बलम के साथ।।
पति के बिना पत्नी सूनी है, कैसे रहे दिन रात।। बलम के साथ।।
माँग ले सावित्री वर माँग ले, जो मन इच्छा होय।। बलम के साथ।।
आँख खुले मेरे साथ ससुर की, वापस मिले सब राज।। बलम के साथ।।
तब यम ने यह वर उसको दीना, चल दिये अगले द्वार।। बलम के साथ।।
पूर पलट कर यम ने देखा, कि सावित्री लागी साथ।। बलम के साथ।।
माता-पिता को यह वर दीजो, पुत्रवान हो जाँय।। बलम के साथ।।
यह वर भी उसको दे दीना, फिर भी लागी है साथ।। बलम के साथ।।
तीसरा वर उसने यह माँगा, पुत्रवती हो जाऊँ।। बलम के साथ।।
यह वर भी यम ने दे दीना, फिर भी लागी साथ।। बालम के साथ।।
मेरे पति को तुम ले जावे, पुत्रवती कैसे होऊँ।। बलम के साथ।।
तब यम ने निज मन में सोचा, मेरी हो गयी हार।। बलम के साथ।।
पति के पास लौट के आयी, पति हैं होश में आय।। बलम के साथ।।
पति को लेकर घर में आयी, थी वह पतिव्रता नारि।। बलम के साथ।।
सास-ससुर को राज मिला था, पिता पुत्रवान होय।। बलम के साथ।।
नारी हो तो ऐसी होवे, जैसी सावित्री नारि, बलम के साथ चलेगी सावित्री।।

होली नं0 58

खेलेंगे हरि नाचेंगे, हरि से झूमर खेलेंगे।।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल वैजन्ती माल।। हरि से झूमर।।
वृन्दावन की कुँज गलिन में, लूटै दही, माखन की चोरी।। हरि से झूमर।।
यमुना के तीरे-तीरे धेनु चरावे, सखियन के संग करत किलोर।। हरि से झूमर।।
वृन्दावन में रास रचो है, सोलह सौ गोपी नन्द किशोर।। हरि से झूमर।।

राधा रूक्मणी इत उत नाचें, बीच में नाचे माखन चोर।। हरि से झूम

डंडिया बाजे वहर बृज वन में, स्योदिय में डंडिया को जोर।। हरि से झूम

बिंदिया बाजे वहर बृज वन में, कपोलिन में बिंदिया को जोर।। हरि से झूम

व्यसना बाजे वहर बृज वन में, नकियन में व्यसना को जोर।। हरि से झूम

हँसिया बाजे वहर बृज वन में, गलियन में हँसिया को जोर।। हरि से झूम

अँगिया बाजे वहर बृज वन में, छतियन में अँगिया को जोर।। हरि से झूम

पटका बाजे वहर ब्रज वन में, लडोलिन में पटका को जोर।। हरि से झूम

लहँगा बाजे वहर ब्रज वन में, अँगियन में लहंगा को जोर।। हरि से झूम

चुड़ियाँ बाजे वहर ब्रज वन में, बँहियन में चुड़ियाँ को जोर।। हरि से झूम

बिछिया बाजे वहर ब्रज वन में, अँगुलिन में बिछिया को जोर।। हरि से झूम

हरि से झूमर खेलेंगे, खेलेंगे हरि नाचेंगे।।

होली नं0 59

खेलत गोपी ग्वाल लाल रे मथुरा से होरी आई।।

कौन पुरी में जन्म लियो है, कहाँ को अवतार।। लाल रे।।

मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल को अवतार।। लाल रे

कौन की कोख में जन्म लियो है, कौन गोद खिलाय।। लाल रे

देवकी कोख में जन्म लियो है, यशोदा गोद खिलाय।। लाल रे

गिरि गोबर गोपाल गजाधर, गजपति ताको नाम।। लाल रे

काहिन की तेरी बाँसुरी कन्हैया, काहिन को तेरो बीन।। लाल रे

हरे बाँस की बाँसुरी कन्हैया, लोहे को तेरो बीन।। लाल रे

कै स्वर बाजे बाँसुरी कन्हैया, कै स्वर को तेरो बीन।। लाल रे

नौ स्वर बाजे बाँसुरी कन्हैया, नौ स्वर बाजे बीन।। लाल रे।।

कहाँ की तेरी बाँसुरी कन्हैया, कहाँ को तेरो बीन।। लाल रे।।

मधुवन की तेरी बाँसुरी कन्हैया, कुँजवन को तेरो बीन।। लाल रे।।

कै मोलो तेरी बाँसुरी कन्हैया, कै मोलो तेरो बीन।। लाल रे।।

लाख टका की बाँसुरी कन्हैया, अनमोलो मेरो बीन।। लाल रे।।

कौन बजावे बाँसुरी कन्हैया, कौन बजावे बीन।। लाल रे।।

कृष्ण बजावे बाँसुरी कन्हैया, राधा बजावे बीन।। लाल रे।।

दास गिरधर आस कान्हा की, दीजो शरण चरनन् की।। लाल रे।।

खेलत गोपी ग्वाल लाल रे, मथुरा से होरी आय रही।। लाल रे।।

होली नं0 60

ऋषि गौतम की नारि अहिल्या, राम चरण से मुक्त भई।

कारण क्या है शिला बनन का, सुन लो ध्यान लगाय।

अहिल्या राम चरण से ....।

एक दिन सूरज से पूछे सुरपति, इन्द्र को रवि समझाय।

अहिल्या राम चरण से ....।

तेरो तेज बड़ो है भारी, शशि को पूछो जाय।

अहिल्या राम चरण से ....।

इन्द्र गये तब शशि के पासा, अहिल्या नारि बताय।

अहिल्या राम चरण से ....।

भोग करन की इन्द्र की इच्छा, तब शशि कपट चलाय।

अहिल्या राम चरण से ....।

ऋषि के ऊपर कपट में जायो, गौतम द्वारे आय
अहिल्या राम चरण से ....।
मुर्गा रूप धरा चन्द्रमा ने, चहकी निद्रा जाय
अहिल्या राम चरण से ....।
ऋषि ने पकड़ा धोती लोटा, जाय करन स्नान
अहिल्या राम चरण से ....।
आधी रात में गंगा माता, ऋषि को सब समझाय
अहिल्या राम चरण से ....।
लौटे ऋषि जब घर में आये, इन्द्र ही चन्द्र को देख
अहिल्या राम चरण से ....।
भग का शाप इन्द्र ने पाया, नारी पत्थर होय
अहिल्या राम चरण से ....।

होली नं0 61

भज दशरथ नन्दन जनक लली, भज दशरथ नन्दन जनक लली।
कौन पुरी में कुँवर जी जन्मे, कौन पुरी में जनक लली।
भज दशरथ नन्दन ....।
अवध पुरी में कुँवर जी जन्मे, जनकपुरी में जनक लली।
भज दशरथ नन्दन ....।
कितने बरस के कुँवर कन्हैया, कितने बरस की जनक लली।।
भज दशरथ नन्दन ....।

बार बरस के कुँवर कन्हैया, सात बरस की जनक लली।।
भज दशरथ नन्दन ....।
रचा स्वयंवर जनकपुरी में, बड़े-बड़े भूपति आये बली।।
भज दशरथ नन्दन ....।
मन में सीता सोच करत है, राजा न्योति बुलाय बली।।
भज दशरथ नन्दन ....।
अब मैं रहूँगी जन्म कुँवारी, राम लछीमन आय बली।।
भज दशरथ नन्दन जनक लली, भज दशरथ नन्दन जनक लली।।

होली नं0 62

लूटयो शहर बजार, पिया तुम क्यों ना मिले रघुनन्दन से।
कहत मन्दोदरी सुन पिय रावण, सपने में देखे राम पिया।।
पिया तुम क्यों न मिले ....।
राम, लछीमन, भरत, शत्रुघन, वे हैं अन्तरयामी पिया।।
पिया तुम क्यों न मिले ....।
तुमने बालम कुमति लगाई, जो सीता हर लाये।।
पिया तुम क्यों न मिले ....।
कभी न दूँगा सीता उनको, लंका पुरी को छोड़।।
पिया तुम क्यों न मिले ....।
राम, लछीमन वन के वासी, उनको पकड़ भगाऊँ।।
पिया तुम क्यों न मिले ....।

तेरी लंका में वानर कूदे, लंका भस्म कराय।
पिया तुम क्यों न मिले ....।
शक्ति बाण एक ही मेरो, रावण उसको लेय।
पिया तुम क्यों न मिले ....।
बुरा किया है ब्रह्मा तुमने, शक्ति लंका को देय।
पिया तुम क्यों न मिले ....।
शक्ति के वचन टरे नहिं टारे, अक्षर लिख दिये कारे।
पिया तुम क्यों न मिले ....।
यह बीड़ा अब वही उठावे, जन्म जती जो होय।
लूट्यो शहर बजार, पिया तुम क्यों ना मिले रघुनन्दन से।

होली नं0 63

गई-गई असुर तेरी नारि मन्दोदरि, सिया मिलन गई बागा में।
थालिय भर के भोजन लाई, भडुवा भर के नीर।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
आओ सीता भोजन पाओ, तुम लंका की नारि।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
ना हम तुमरो भोजन पावें, ना हम लंका नारि।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
जो तुम होती सत्य की सीता, लंका कैसे आय।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।

तेरो कन्ता मो को लायो, अपनो नाश कराय।।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
जो मैं होंगी सत्य की सीता, होय असुर कुल नाश।।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
कहत मन्दोदरि सुन पिय रावण, वो त्रिलोकी नाथ।।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
हम जा त्रिया मेरे आधे से, उनकी करत बढ़ाई।।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
बीस भुजा दस शीश हमारे, हम किसकी परवाय।।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
लंका जैसो कोट हमारो, समुन्दर जैसी खाई।।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
मेघनाद जैसो पुत्र हमारो, कुम्भकर्ण बल भाई।।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
पवन हमारे देत फुहारे, इन्द्र टहलवा ठाड़ो।।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
चन्द्र सूरज जैसे दीपक हमारे, हम किसकी परवाय।।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
सीता बेटी जनक राजा की, चाँदिन देत बुलाय।।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
रावण मारि विभीषण थापे, हो गई जै-जैकार।।
मन्दोदरि सिया मिलन ....।
गई-गई असुर तेरी नारि मन्दोदरि, सिया मिलन गई बागा में।।

होली नं0 64

जल कैसे भरूँ जमुना गहरी, जल कैसे भरूँ जमुना गहरी।।
कुएँ में जाऊँ तो कीछ लगत है, जमुना जाऊँ तो पिचकारी।
जल कैसे भरूँ जमुना ....।
उठ के भरूँ राजा राम देखत है, बैठि भरूँ जमुना गहरी।
जल कैसे भरूँ जमुना ....।
जमुना तट पर कदम की छाया, जमुना बहुत है आसमानी।
जल कैसे भरूँ जमुना ....।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच मिलो है गिरधारी।
जल कैसे भरूँ जमुना ....।
लहर-बहर जमुना जी बहत हैं, जमुना चढ़ी है आसमानी।
जल कैसे भरूँ जमुना ....।
सासु ननद से छिपकर आई, सेज पिया के ना ठहरी।
जल कैसे भरूँ जमुना ....।
चलत-चलत जमुना तट आई, हाथ घड़ा सिर पै गगरी।
जल कैसे भरूँ जमुना ....।
होत विलम्ब बहुत दिन बीते, सासु ननद देखे मगरी।
जल कैसे भरूँ जमुना ....।
घर मेरो दूर गगन सिर भारी, धमकी चलूँ छलके गगरी।
जल कैसे भरूँ जमुना ....।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में दान चुको गोरी।।
जल कैसे भरूँ जमुना ....।

[illegible]सु धतोरी नन्द भतेरी, बलमा हमारो सदा बैरी।।
[illegible] कैसे भरूँ जमुना ....।
[illegible] कैसे भरूँ जमुना गहरी, जल कैसे भरूँ जमुना गहरी।।

होली नं0 65

[illegible] बली के हो, राजा बली के द्वार मचे होली।।
[illegible] गावे को यो बजावे, को यो ख्याल खेले होरी।।
[illegible] बली के ....।
[illegible] गावे कृष्ण बजावे, गोपी ख्याल खेले होली।।
[illegible] बली के ....।
[illegible] जुग में कृष्णा होली खेले, कै जुग में राधा गोरी।।
[illegible] बली के ....।
[illegible] में कृष्णा होरी खेले, द्वापर में राधा गोरी।।
[illegible] बली के ....।
[illegible] को पहन कृष्णा होरी खेले, का को पहन राधा गोरी।।
[illegible] बली के ....।
[illegible] पहन कृष्णा होरी खेले, चीर पहन राधा गोरी।।
[illegible] बली के ....।
[illegible] की पिचकारी बनी है, भीजत है राधा गोरी।।
[illegible] बली के द्वार मची होली, राजा बली के हो।।

होली नं0 66

लै बामन अवतार हरी तुम बलि छलने को आये हो
हाथ लकड़िया, पैर खड़ाऊँ, माथे तिलक लगाय
हरी तुम बलि छलने ....।
हाथ कमण्डल, बगल में पोथी, लम्बी कर लई धोती
हरी तुम बलि छलने ....।
बामन जी को आसन दीना, चरण शशी नवाय
हरी तुम बलि छलने ....।
हाथ जोड़ के दण्डवत कीन्हा, जाय उन्हीं के पास
हरी तुम बलि छलने ....।
राजा बलि जी बोलन लागे, बामन जी से बात
हरी तुम बलि छलने ....।
क्या कारण तुम आये बमना, मोहे अरज लगाय
हरी तुम बलि छलने ....।
वचन देहो मोहे राजा, तब पूछोगे बात
हरी तुम बलि छलने ....।
एक बच्चा दो तिरकाली बच्चा, बच्चा हार न होय
हरी तुम बलि छलने ....।
तीन पैग धरती दे राजा, भजन की कोठी बनाय
हरी तुम बलि छलने ....।
जा रे बमना कुछ नहीं माँगा, मैं राजा सन्तोषी
हरी तुम बलि छलने ....।
माल द्रव्य की कुछ नहिं कमती, बामन किस्मत देय
हरी तुम बलि छलने ....।

दो ही पैग में जग को नापा, तीसरों रह गयो बाकि।
हरी तुम बलि छलने ....।
बामन जी अब बोलन लागे, राजा बलि के पास।
हरी तुम बलि छलने ....।
तीसरों पैग अब कहाँ धराऊँ, बच्चा तुमने देय।
हरी तुम बलि छलने ....।
बली के सिर में पाँव धरो है, भेज दिया पाताल।
हरी तुम बलि छलने को आये हो।।

होली नं0 67

भजो - भजो कन्हैया गिरधारी, भगतन के तुम हितकारी।।
मथुरा में हरि ने जन्म लियो है, गोकुल आये गिरधारी।
भजो-भजो कन्हैया ....।।
मोर मुकुट माथे पर सोहे, गल मोतियन की हार।
भजो-भजो कन्हैया ....।।
भार उतारन को अवतार लियो है, कृष्ण कन्हैया गिरधारी।
भजो-भजो कन्हैया ....।।
माई जशोदा गोद खिलावे, माखन खावे गिरधारी।
भजो-भजो कन्हैया ....।।
माखन खावे, दही लुटावे, कूदि पड़े हैं गिरधारी।
भजो-भजो कन्हैया ....।।
जमुना के तीरे-तीरे धेनु चुगावे, वंशी बजावे गिरधारी।
भजो-भजो कन्हैया ....।।

अकासुर मारे, बकासुर मारे, जरासन्ध की मटहारी।
भजो-भजो कन्हैया ....।।
जरासन्ध मारा, शिशुपाल मारा, असुर मोर खलकारी।
भजो-भजो कन्हैया ....।।
इन्द्र रिसाय चढ़यो ब्रज ऊपर, गोवर्धन नख पर धारी।
भजो-भजो कन्हैया ....।।
गरुड़ छोड़ि प्रभु पैदल दौड़े, गज की टेर सुनी भारी।
भजो-भजो कन्हैया ....।।
ग्राह मारि गज के फन्दे छुड़ाये हो गयी जै-जै कार।
भजो-भजो कन्हैया ....।।
हाथ बँसुरिया, काँध कमलिया, दान जो लीनू छलकारी।
भजो-भजो कन्हैया ....।।
वृन्दावन में रास रचो है, नाचत है सब ब्रज नारी।
भजो - भजो कन्हैया गिरधारी, भगतन के तुम हितकारी।।

होली नं0 68

बिरहन तेरी मुरली घनघोरा, मोहन तेरी मुरली घनघोरा।। बिरहन तेरी।।
काहे ने पाले हरेवा परेवा, काहे ने पाले ये मोरा।। बिरहन तेरी ....।
राजा ने पाले हरेवा परेवा, रानी ने पाले ये मोरा।। बिरहन तेरी ....।
कहाँ बसत है हरेवा परेवा, कहाँ बसत है ये मोरा।। बिरहन तेरी ...।
जंगल बसत है हरेवा परेवा, शहर बसत है ये मोरा।। बिरहन तेरी....।
कहाँ चुगत है हरेवा परेवा, कहाँ चुगत है ये मोरा।। बिरहन तेरी ...।

दाना चुगत है हरेवा परेवा, मोती चुगत है ये मोरा बिरहन तेरी ...।
मोहन सुन मुरली घनघोरा, बिरहन तेरी मुरली घनघोरा।।

होली नं0 69

लाला रे लाला पिय बिन होरी को खेलें।
... अब खेले झकमार लाला बिन पिय होली को खेलें।।
पिया को दिल मोहे नाहिं लाला, बिन पिया होली को खेलें।।
लाला रे लाला कमल फूले जल हरी बसे हो, चन्दा बसे आकाश।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला धूप पड़े, धरती तपे, हो गर्द उड़े आकाश।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला कहाँ दिल्ली, कहाँ आगरा, कहाँ बसे मुरादाबाद।।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला यहाँ दिल्ली, वहाँ आगरा, बीच में मुरादाबाद।।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला कहाँ छः यो गढ़ सिंगारो, कहाँ चन्द चौपाल।।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला धारा छ यो गढ़ सिंगारो, पत्थर को मुरादाबाद।।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला शीष छ यो गढ़ सिंगारो, पान चन्दन चौपाल।।
लाला बिन पिया ....।

लाला रे लाला कौन बसे गढ़ आगरा, कौन बसे मुरादाबाद।।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला ससुर बसै गढ़ आगरा, जेठी बसे मुरादाबाद।।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला देवर बसै गढ़ आगरा, बलम चन्दन चौपाल।।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला जिया मेरी पिय में बसै, दो जन रहे समाय।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला मन फटे दिल उचके, पलंगा नही समाय।।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला आम से मीठी अमेली, गुड़ से मीठो खाँड़।।
लाला बिन पिया ....।
लाला रे लाला जोवन मीठी नै क्यानी, सौ बरसै की राड़।।
लाला रे लाला पिय बिन होरी को खेलें।

होली नं0 70

तुम तो भयी तपवान कालिका, कलयुग में अवतार भयी।
हर - हर पीपल द्वारे विराजै, लाल ध्वजा पहरानी कालिका।
कलयुग में अवतार ....।।
चन्ड-मुन्ड तेरे साथ चलत है, लाकुड है अगवानी कालिका।
कलयुग में अवतार ....।।

छत्र मुकुट तेरे सिर पर विराजे, सिंह चढ़ी मतवाली कालिका।
कलयुग में अवतार भई ....।।
कोई चढ़ावे लड्डू पेड़ा, कोई पान सुपारी कालिका।
कलयुग में अवतार भई ....।।
कोई जावे दर्शन करने, कोई करे यश गान कालिका।
कलयुग में अवतार भई ....।।
तू जननी जग पालन करती, तो को वेद बखानी कालिका।
कलयुग में अवतार भई ....।।
दास नारायण को आस चरण की, तू मेरी महारानी कालिका।
कलयुग में अवतार भई ....।।
तुम ही प्यारे हमारे बेटा, कौरव दल मत जाय कालिका।
कलयुग में अवतार भई ....।।
तुमको प्रीति बुलायो बेटा, कौरव दल मत जाय कालिका।।
कलयुग में अवतार भई ....।।
दुर्योधन को कपट सुहावे, विष के लड्डू खिलाय कालिका।
कलयुग में अवतार भई ....।।
अर्जुन बोले सुन ले भइया, सुन ले बचन हमारे कालिका।।
कलयुग में अवतार भई ....।।
श्याम सुन्दर की कृपा से हम, उनको डारें मार कालिका।।
कलयुग में अवतार भई ....।।

होली नं0 71

काली बादल में बिजुली चमकैगो, बादल में बिजुली चमकैगो।।
हो जैसी चमकै तरेवारा, बादल में बिजुली चमकैगो।
जो तेरे सिंर में डंडिया है तो डंडिया चमके यारा,
काली बादल में बिजुली चमकैगो ....।।
जो तेरे कपालि में बिंदिया है तो बिंदिया चमके यारा,
काली बादल में बिजुली चमकैगो ....।।
जो तेरी अँखिया में सुरमा है तो सुरमा चमके यारा,
काली बादल में बिजुली चमकैगो ....।।
जो तेरे नाक में व्यसना है तो व्यसना चमके यारा,
काली बादल में बिजुली चमकैगो ....।।
जो तेरे कान में कुण्डल है तो कुण्डल चमके यारा,
काली बादल में बिजुली चमकैगो ....।।
जो तेरी छाती में अँगिया है तो अँगिया चमके यारा,
काली बादल में बिजुली चमकैगो ....।।
जो तेरी हाथ में पहुँची है तो पहुँची चमके यारा,
काली बादल में बिजुली चमकैगो ....।।
जो तेरे कमर में कर्दनी है तो कर्दनी चमके यारा,
काली बादल में बिजुली चमकैगो ....।।
जो तेरे जाँघ में लहंगा है तो लहंगा चमके यारा,
काली बादल में बिजुली चमकैगो ....।।

जो तेरी गठिया में छल्ला है तो छल्ला चमके यारा,
काली बादल में बिजुली चमकैगो ....।।
जो तेरी अंगुली में बिछिया है तो बिछिया चमकै यारा,
काली बादल में बिजुली चमकैगो ....।।

होली नं0 72

मान मै गुजर दान हमारो, दान दिये घर जाय छबेली छैला भयो महा दूयौरा तुम्हारो।
कहाँ के तुम दानिय राजा, कहाँ के घटवान छबेली छैला भयो....
मथुरा के हम दानिय राजा, जमुना के घटवान छबेली छैला भयो....
कहाँ के तुम ग्वाल गुजरिया, कहाँ दधि बेचन जाय छबेली छैला भयो....
मथुरा के हम दानिय राजा, कुल दधि बेचन जाय छबेली छैला भयो....
हम गोड़िय को दान पड़त है, दान दिये घर जाय छबेली छैला भयो....
ना हम ला दें लौंग सुपरिया, ना पर्वत की सौंट छबेली छैला भयो....
हम जो ला दें दधि की मटकिया, दान कहाँ को देय छबेली छैला भयो....
लेत तुम्हारे लौंग सुपरिया, मौ पर्वत की सौंट छबेली छैला भयो....
दान दधिय को दान महिय को, दान जोवन को देय छबेली छैला भयो....
तोड़ी पत्ता लगा हरी दोना, दइया दूँ चखवाय छबेली छैला भयो....
तोड़ कन्हैया बड़ को पत्ता, दइया दूँ चखाय छबेली छैला भयो....
बड़ के पत्ते में ब्रह्मा विराजे, पत्ता न तोड़ो जाय छबेली छैला भयो....
तोड़ कन्हैया पीपल को पत्ता, दइया दूँ चखवाय छबेली छैला भयो....

पीपल के पत्ते में विष्णु विराजे, पत्ता न तोड़ो जाय छबेली छैला भयो...
तोड़ कन्हैया ढाक को पत्ता, दईया दूँ चखवाय छबेली छैला भयो...
दहिया तुम्हारो खट्टो रे मीठो, छाँछ गई अमलाय छबेली छैला भयो...
मारू मुक्का फोड़ूँ मटका, दइया दूँ बिखराय छबेली छैला भयो...
जाय पुकारूँ कंस राजा को, तै डारू मरवाय छबेली छैला भयो...
एक कंस भी कहाँ धराउँ, सौसर कंसा लाय छबेली छैला भयो...
कंस छोड़ कंसासुर मारा, त्वै संग खेलूँ धुमार छबेली छैला भयो... ।।

होली नं0 73

हरिजी सकल अयोध्या पानन छावे, वरना छावत नाहिं ।।
हरिजी उत वमना धोखे दशरथ, माँच कटन वन जाय ।। हरिजी सकल...
हरिजी दशरथ राजा माँच कटन गये, अँगूठा लागी फांस ।। हरिजी सकल...
हरिजी राजा दशरथ की तीनों रानियाँ, चारो पहरा देय ।। हरिजी सकल...
हरिजी पहलों पहरा रानी कौशल्या रहना नींद न होय ।। हरिजी सकल...
हरिजी दूसरो पहरा रानी सुमित्रा, रहना नींद न होय ।। हरिजी सकल...
हरिजी तीसरो पहरा रानि कैकई को, सोवे पाँव पसार ।। हरिजी सकल...
हरिजी मुख में अँगूठा ले के रानिया पीड़ सबै हर लेय ।। हरिजी सकल...
हरिजी माँगि ले रानी वर को माँगि ले जो मन इच्छा होय ।। हरिजी सकल...
हरिजी जो मैं माँगू न दे राजा, वचन अकारथ जाय ।। हरिजी सकल...
हरिजी जो तू माँगे न दे राजा, क्षत्रिय धरम घट जाय ।। हरिजी सकल...
हरिजी एक बच्या, दूजो बच्या, त्रिकाली बच्या देय ।। हरिजी सकल...

हरिजी राम चन्द्र वनवासे दिजो, भरत दिजो राज ।। हरिजी सकल...
हरिजी राम लखन वन को जाये द्वारे लेखो तलाक ।। हरिजी सकल...
हरिजी राम चन्द्र वनवास चले हैं, सिता लागी साथ ।। हरिजी सकल...
हरिजी संग सीता जनें चलो हो भरोयो भूख प्यास ।। हरिजी सकल...
हरिजी जो तुम खाओ सो हम खावें कबहु न छोड़ें साथ ।। हरिजी सकल...
हरिजी सीता वन में रहना, वन फल खाना वन ही की सज्जा होय ।। हरिजी सकल...
हरिजी सीता कुशही ओड़ना, कुशही विछौना कुशही को सज्या होय । हरिजी सकल..
हरिजी दोनों जना जब रथ पर बैठे लछीमन भये उदास ।। हरिजी सकल...
हरिजी आओ लछिमन रथ पर बैठो क्यों रहे उदास ।। हरिजी सकल...
हरिजी तीनों जन जब रथ पर बैठे चित्रकूट पग धाय ।। हरिजी सकल...
हरिजी एक वन लागों, दूजो वन लागों, तीजे वन के छोर ।। हरिजी सकल...
हरिजी सीता चौमासा तो सावन कहिये खेती अधिक सुहाय ।। हरिजी सकल...
हरिजी काहिन को मैं करूँ नथनिया, काहिन के दो बैल ।। हरिजी सकल...
हरिजी सीता नाग पकड़कर करो नथनिया सींग पकड़ दो बैल ।। हरिजी सकल...
हरिजी वन में सीता फुलवारी बोवे, मृगा चूँगी चूँगी जाय ।। हरिजी सकल...
हरिजी लाओ लछीमन धनुष हमारो, राम के चारों बाण ।। हरिजी सकल...
हरिजी कंचन को यो मृगा है रे, लाओ इसकी छाल ।। हरिजी सकल...
हरिजी धनुष उठाकर रघुवर दौड़े, कपटी मृग दिखाय ।। हरिजी सकल...
हरिजी धनुष बाण मृगा को लागों, लछीमन शब्द उचारी ।। हरिजी सकल...
हरिजी है लछिमन जब शब्द भयो है, सीता व्याकुल होय ।। हरिजी सकल...
हरिजी रघुवर पर संकट है भारी, खबर करो तुम जाय ।। हरिजी सकल....

हरिजी रघुवर जी हैं अन्तरयामी कैसे संकट होय।। हरिजी सकल...
हरिजी जान गई हूँ सब चतुराई, हमें वरन को आस।। हरिजी सकल...
हरिजी ऐसे वचन सुने लछिमन ने उठ बैठे तत्काल।। हरिजी सकल...
हरिजी भस्म रेख लछिमन ने गाड़ी सीता को समुझाय।। हरिजी सकल...
हरिजी दिय हो माता आज्ञा दीजो, खबर करन में जाय।। हरिजी सकल...
हरिजी जाओ लछिमन जल्दी जाओ, उन पर संकट होय।। हरिजी सकल...
हरिजी दो कर जोड़ करी प्रणाम, चरणों शीश नवाय।। हरिजी सकल...
हरिजी जोगी भेष बना रावण ने बम-बम शब्द उचारी।। हरिजी सकल...
हरिजी बहुत दिनों का भूखा जोगी, कुटी में अलख जगाय।। हरिजी सकल...
हरिजी दिय हो माता भिक्षा दीजो, जोगी द्वारे आय।। हरिजी सकल...
हरिजी लिय हो बाबा भिक्षा लीजो वन फल हमारे पास।। हरिजी सकल...
हरिजी बंधी जो भिक्षा ना ले, बाबा यहीं पर धूनी रमाय।। हरिजी सकल...
हरिजी देना है तो बाहर निकलो, नहीं तो दूँ मैं श्राप।। हरिजी सकल...
हरिजी बाहर आकर भिक्षा लाई, सीता को हर लीय।। हरिजी सकल...
हरिजी लिय हो बाबा भिक्षा लीजो वन फल हमारे पास।। हरिजी सकल...
हरिजी सकल अयोध्या पानन छावे, वरना छावत नाहिं।।

होली नं0 74

अरे हाँ रे बहुरिया तेरो हरेवा तेरो हरेवा मन लागो छयलवा तेरो हरेवा।
अरे हाँ बहुरिया, स्यूनी तेरी रे, स्यूनी तेरी तेल की धार।। बहुरिया तेरो..
अरे हाँ बहुरिया, भौं तेरा रे, भौं तेरा चड़ैया है कमान।। बहुरिया तेरो..

अरे हाँ बहुरिया, आँखी तेरी रे, आँखी तेरी जली है मशाल।। बहुरिया तेरो..
अरे हाँ बहुरिया, नाक तेरो रे, नाक तेरो खड़ग की धार।। बहुरिया तेरो..
अरे हाँ बहुरिया, दाँत तेरा रे, दाँत तेरा दाड़म की चोल।। बहुरिया तेरो..
अरे हाँ बहुरिया, गली तेरी रे, गली तेरी मोर की टोर।। बहुरिया तेरो..
अरे हाँ बहुरिया, कन्ध तेरो रे, कन्ध तेरो सिमल की रेट।। बहुरिया तेरो..
अरे हाँ रे बहुरिया तेरो हरेवा तेरो हरेवा मन लागो छयलवा तेरो हरेवा।

होली नं0 75

शलुवा में झमकी रहीं दो मैना। शलुवा में झमकी रही दो मैना।
किन हिन पाले हरेवा परेवा, किन हिन पाले दो मैना।। शलुवा में .....
राजा ने पाले हरेवा परेवा, रानी ने पाले दो मैना।। शलुवा में .....
कहाँ बसे ये हरेवा परेवा, कहाँ बसे ये दो मैना।। शलुवा में .....
जंगल में बसे हरेवा परेवा, शहर बसे चंचल मैना।। शलुवा में .....
कहाँ चूगें ये हरेवा परेवा, कहाँ चूगें ये दो मैना।। शलुवा में .....
लाल चूगें ये हरेवा परेवा, मोती चूगें चंचल मैना।। शलुवा में .....
शलुवा में झमकी रही दो मैना। शलुवा में झमकी रही दो मैना।

होली नं0 76

दशरथ को लछीमन बाल जती, दशरथ को लछीमन बाल जती।।

बारह बरस वन खण्ड में रह्यो, भूख न लागे एक घड़ी।। दशरथ को..
बारह बरस सीता संग रही है, नींद न लागे एक घड़ी।। दशरथ को..
बारह बरस गंगा तट रह्यो, प्यास न लागे एक घड़ी।। दशरथ को..
बारह बरस सीता संग रह्यो, दुख न लागे एक घड़ी।। दशरथ को..
दशरथ को लछीमन बाल जती, दशरथ को लछीमन बाल जती।।

होली नं0 77

अंचला मेरो छोड़, श्याम तेरी गऊ चली वृन्दावन को।।
कानन में कुंडल सो हैरे-२, सिर चन्दन की डोर।। श्याम तेरी...
हाथन में खड़वा सो हैरे-२, गल मोतियन की हार।। श्याम तेरी...
सोलह सौ गुजर निकसी हो-२, सिर पर दही को भाठ।। श्याम तेरी...
सोलह सौ गुजर लूटी हो-२, नदी जमुना के तीर।। श्याम तेरी...
अंचला मेरो छोड़ श्याम तेरी गऊ चली वृन्दावन को।।

होली नं0 78

सिर बाँधे मुकुट खेले होली, सिर बाँधे मुकुट खेले होली।।
पहली होली अवध में खेलें, सीता राम भई जोड़ी। सिर बाँधे मुकुट..
दूसरी होली मथुरा में खेलें राधे कृष्ण भई जोड़ी। सिर बाँधे मुकुट..
तीसरी होली कैलाश में खेलें शिव पार्वती की भई जोड़ी। सिर बाँधे मुकुट..

चौथी होली गयाजी में खेलें, गया गजाधर भई जोड़ी। सिर बाँधे मुकुट..
पाँचवी होली बैकुण्ठ में खेलें, लक्ष्मी नारायण भई जोड़ी। सिर बाँधे मुकुट..
छठवी होली जगत बीच खेलें, नर और नारी भई जोड़ी। सिर बाँधे मुकुट..
सिर बाँधे मुकुट खेले होली, सिर बाँधे मुकुट खेले होली।।

होली नं0 79

कहना मेरो मान पिया, तुम वैर न कीजो रघुवर से ....टेक ....
जिनकी नारी लाये चुराकर, उनको ईश्वर जान पिया। तुम वैर न...
स्वामि हैं सीता के त्रिलोकी नाथा, लक्ष्मण देवर साथ। तुम वैर न...
हनुमन्त जैसे सेवक उनके, जिनने लंका जलाय। तुम वैर न...
राम की सीता राम को दे दो, राम के शरण में जाय। तुम वैर न...
भ्राता तुम्हारे भक्त विभीषण, राम के दल को जाय। तुम वैर न...
जिनकी नारी हम हर लाये, उनकी करत बढ़ाई पिया। तुम वैर न...
सोने की जैसी लंका हमारी, समुद्र जैसी खाई। तुम वैर न...
इन्द्रजीत जैसो पुत्र हमारो, कुम्भकरण बल भाई। तुम वैर न...
एक लख पुत्र सवा लख नाती, तीनों लोक बसाय। तुम वैर न...
बीस भुजा दस शीश हमारी, हम किसकी परवाह। तुम वैर न...
चंद सूरज जैसे दीपक हमारे, इन्द्र टहलवा होय। तुम वैर न...
कहना मेरो मान पिया, तुम वैर न कीजो रघुवर से।।

होली नं0 80

हन गर्व करो मत कोई लला, हन गर्व करो मत कोई लला....

जोई गर्व कर्‌यो सोई हार्‌यो लला, हन गर्व करो मत ....

गर्व कियो है लंकापति रावण, उसके कुल का नाश भयो। हन गर्व ....

हन गर्व कियो है रत्नागिरि सागर, उसका जल सब नष्ट भयो। हन गर्व ...

गर्व कियो चकवी, चकवा ने, उनको रहिन बिछोह भयो। हन गर्व ...

गर्व कियो राजा बलि ने, पाताल में उनको भेज दिया। हन गर्व ....

गर्व कियो है राजा दुर्योधन, उसका राज सब नष्ट हुआ। हन गर्व ......

गर्व कियो है बाणासुर ने, उसकी भुजा को काट दिया। हन गर्व ....

गर्व कियो है नारद मुनि ने, बन्दर रूप दिखाय दिया। हन गर्व ......

होली नं0 81

होली खेलत है कैलाश पती, होली खेलत है शिव पार्वती ..टेक ..

जिनकी जटा में गंगा विराजै, माथे में चाँद सुहाय अती। होली खेलत..

हाथ में जिनके डमरू विराजै, कान में कुण्डल झलकैं अती। होली खेलत..

तीनों लोक है त्रिशूल हाथ में, कण्ठ में नाग की डोर गुँथी। होली खेलत..

बैठे बागम्बर ओढ़े बिगम्बर, अंग विभूति रमाय अती। होली खेलत..

भूत प्रेत का साथ है जिनको, पीवत भाँग धतूर अती। होली खेलत..

कैलाश पर्वत देव निरंजन, साथ में गिरिजा और सती। होली खेलत..

होली खेलत है कैलाश पती, होली खेलत है शिव पार्वती। होली खेलत..

होली नं0 82

तू भज ले सिया रघुनन्दन को, तू भज ले सिया रघुनन्दन को।।... टेक

दशरथ नन्दन आनन्द कन्दन, सूर्य वंश कुल भूषण को।। तू भज ...

जानकी नायक जन सुखदायक, दुष्टन के मन भंजन को।। तू भज ...

विश्वामित्र जी को यज्ञ सफल कियो, गौतम नारि उदारन को।। तू भज ...

जनक स्वयंवर पावन कीन्ही, कठिन धनुष के खण्डन को।। तू भज ...

वन में जाय ऋषि मुनि सुख दीन्हो, दुष्ट दलन सुख चन्दन को।। तू भज...

सागर सेतु सहज में बाँध्यो, कपि दल पार उतारन को।। तू भज...

रावण के दस मस्तक काटे, बीस भुजा के खण्डन को।। तू भज...

मैं हूँ दास प्रभु शरण तुम्हारे, काटत जग के फन्दन को।। तू भज...

होली नं0 83

तू भज ले रघुवर गिरधारी, तू भज ले रघुवर गिरधारी।। ... टेक

अवध पुरी में राम प्रकट भये, मथुरा में भये बनवारी।। तू भज ...

इत कौशल्या गोद खिलावे, उत यशोमति महतारी।। तू भज ...

यहाँ मौर मुकुट सिर साजै, वहाँ मोर मुकुट धारी।। तू भज ...

यहाँ बाण धनुष बहु राजै, वहाँ मुख पर मुरली धारी।। तू भज ...

यहाँ चरण अहिल्या तारी, वहाँ कुब्जा को दियो तारी।। तू भज...

यहाँ सागर सेतु बनायो, वहाँ नख पर है गिरिधारी।। तू भज...

यहाँ रावण के मस्तक छेदे, वहाँ कंसासुर को दियो मारी।। तू भज...

होली नं0 84

उठ भरत राम मिलन आये, उठ भरत राम मिलन आये। टेक
काहिन को यो लगे बिछौना, काहि के कलश भरन आये। उठ भरत...
लछिमन को यो लगे बिछोना, राम के कलश भरन आये। उठ भरत...
चारों भैया मिलन जो लागे, नैनन नीर भरन आये। उठ भरत...
कहाँ-कहाँ भय्या विपद भई है, कहाँ-कहाँ तुम सुख पाये। उठ भरत...
वन-वन भैया विपद भई है, अवध पुरी में सुख पाये। उठ भरत...
कौशल्या को हर्ष भयो है, कैकई मन में पछताई। उठ भरत...
सारी अयोध्या मिलन को दौड़ी, सब ही राम मिलन आये। उठ भरत...
उठ भरत राम मिलन आये, उठ भरत राम मिलन आये।

होली नं0 85

बजी रही बजी रही बजी रही, मोहन तेरी बंसी बजी रही। टेक।
कहाँ मथुरा कहाँ गोकुल नगरी, कहाँ पर यमुना बही रही। मोहन तेरी...
पूरब मथुरा, पश्चिम गोकुल, बीच में यमुना बही रही। मोहन तेरी...
काहिन की तेरी वंशी बनी है, कै सुर वंशी बजी रही। मोहन तेरी...
हरिया बाँस की बंसी बनी है, तुरहुर वंशी बजी रही। मोहन तेरी...
बंसी बजावे रास रचावै, घर-घर सखियाँ दौड़ रही। मोहन तेरी...
बंसी बजावे नागहि नाथै, नागिन शीश नवाय रही। मोहन तेरी...
बंसी बजावे धेनु चुँगावे, मधुवन की छवि होई रही। मोहन तेरी...
बजी रही-बजी रही बजी रही, मोहन तेरी वंशी बजी रही।